Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

जे सूर करें पचखांण, ते एक धारा रहे।
त्यां जीतब जनम सुधारियो।।

शूरवीर आदमी जो संकल्प करता है उसे एकधार निभाता है। उसका जीवन धन्य हो जाता है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 39 • 29 जून - 05 जुलाई 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 27-06-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

सक्सेस के नशे और ईगो से दूरी ही असली लाइफस्टाइल है : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

दिमाग के ओवरथिंकिंग और स्ट्रेस को डिलीट करना ही असली ध्यान है : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

युवाचार्य के प्रति हो उचित विनय का व्यवहार : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में युगप्रधान का संदेश;— बड़ों के प्रति विनय और युवाचार्य के अनुशासन को 'अमृत का प्याला' मानना ही असली पुरुषार्थ है

लाडनूं।
24 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूं सुधर्मा सभा में चतुर्विध धर्मसंघ को उत्तरज्झणाणि आगम के माध्यम से निर्धारित विषय 'असभ्य वाणी से बचें' पर पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्य प्रवर ने इस दौरान देशाटन के लाभ बताने के साथ-साथ धर्मसंघ में 'युवाचार्य पद' की गरिमा, विनय और मर्यादा को लेकर विशेष मार्गदर्शनात्मक पाथेय प्रदान किया।

देशाटन से बढ़ता है अनुभव, एक जगह जमकर रहने से आ सकती है शिथिलता—आचार्य प्रवर ने साधु जीवन में निरंतर गतिशीलता का महत्व समझाते हुए कहा।

१. विहार और धर्म प्रचार : देशाटन (विहार यात्रा) करने से धर्म का व्यापक प्रचार होता है, दीक्षाओं में वृद्धि होती है और नए परिवेश व लोगों से मिलने के कारण साधु का अनुभव बढ़ता है।

२. मर्यादा का पालन : हमारे साधु समुदाय में सामान्यतया लगातार दो चातुर्मास एक जगह करना विहित नहीं है (वृद्धावस्था या शारीरिक अक्षमता जैसी विशेष स्थिति अलग है)। एक जगह लंबे समय तक रहने से संग, मोह, राग और परिचय बढ़ता है, जिससे आचार में शिथिलता आ सकती है। साधु को हिंस्र पशुओं जैसी कठिनाइयों का सामना करते हुए भी निर्भीक होकर यात्रा करते रहना चाहिए।

> साफ-साफ कहने का शौक है, तो पहले साफ-साफ सुनने का माद्दा भी पैदा करो
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

वाणी होनी चाहिए 'शुगर कोटेड', कठोर वचनों को भी शांति से सहें— भाषा विवेक पर बोध देते हुए शांतिदूत ने फरमाया।

१. वाणी का संयम : कोई कठोर वचन या कुवचन भी बोल दे, तो भी साधु को असभ्य वाणी से बचना चाहिए। स्वयं पर संयम रखना और अनाक्रोशपूर्ण भाषा बोलना ही बड़ी बात है। साफ-साफ कहने वाले को साफ-साफ सुनने की क्षमता भी रखनी चाहिए।

२. विष या अमृत : हमारी भाषा अमृत भी बन सकती है और विष भी। साधु की भाषा मीठी और 'शुगर कोटेड' होनी चाहिए। यथार्थ भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखकर बोलना चाहिए, लेकिन अयथार्थ (झूठ) को शुगर कोटेड करके भी कभी नहीं बोलना चाहिए। मर्मभेदी बातें कहकर किसी को दुःखी न करें।

युवाचार्य के प्रति विनय- व्यवहार : संघीय मर्यादा के ९ अचूक सूत्र— आचार्यश्री ने स्पष्ट फरमाया कि धर्मसंघ में युवाचार्य का स्थान आचार्य के पश्चात द्वितीय होता है, अतः उनके प्रति प्रोटोकॉल का पालन संघीय व्यवस्था का अनिवार्य हिस्सा है। इसके लिए उन्होंने निम्न मार्गदर्शन दिया।

१. अमृत का प्याला : युवाचार्य किसी त्रुटि पर अंगुली निर्देश करें या उलाहना दें, तो आक्रोशित होने के स्थान पर समता रखनी चाहिए और उस सीख को "अमृत का प्याला" मानकर स्वीकार करना चाहिए। (शेष पेज 9 पर)

कोहिनूर से भी कीमती हैं साधु के 'पांच महाव्रत' : आचार्यश्री महाश्रमण

दुनिया की दंड संहिता पर युगप्रधान ने फरमाया—कोई देश के कानून से भले ही बच जाए, कर्मों के फल से नहीं बच सकता

लाडनूं।
22 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'पांच महाव्रतों की आराधना' पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रतिबोध प्रदान किया।

दंड संहिता और कर्म फल का सिद्धांत : खुद ही भुगतना होगा फल—आचार्य प्रवर ने दुनिया की अदालती व्यवस्था और कर्मों के अटूट सिद्धांत को जोड़ते हुए गहरा बोध दिया।

१. व्यवस्था और न्याय : दुनिया में दंड संहिता चलती है जिसकी अपनी व्यवस्था होती है कि किस अपराध पर किस प्रकार का दंड दिया जाए। साधु समुदाय में भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को यथायोग्य देखकर अपराध की स्थिति के अनुसार दंड व प्रायश्चित का निर्धारण किया जाता है।

२. कर्मों की कोर्ट : राष्ट्र की लोकतंत्रात्मक या राजतांत्रिक व्यवस्था में भी अपराध करने वालों के लिए दंड का प्रावधान होता है। इसी प्रकार,

आदमी को अपने शुभ और अशुभ कर्मों का फल स्वयं ही भोगना होता है। शुभ कर्मों का फल शुभ रूप में और पाप कर्मों का फल अशुभ रूप में प्राप्त होता है।

> जीवन में बड़े व्रत न सही, लेकिन छोटे 'अणुव्रतों' को उतारना ही मनुष्य की वास्तविक संपत्ति और सबसे बड़ा धन है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

पांच महाव्रत बनाम भौतिक दुनिया : मेरु पर्वत उठाने जैसी बड़ी साधना— शांतिदूत ने आगम के प्रमाण और सुंदर उपमाओं के माध्यम से महाव्रतों की महत्ता को रेखांकित किया।

१. असली हीरे : साधु के लिए पांच महाव्रतों की पालना व आराधना काम्य है। दसवै-आलियं में सर्व प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह विरमण के रूप में ये पांच महाव्रत बताए गए हैं। इन्हें संक्षिप्त रूप में उत्तराध्ययन में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के नाम से वर्णित किया गया है, इन पांच महाव्रतों को पांच हीरों के रूप में देखा जा सकता है जिनके सामने दुनिया के हीरे तुच्छ हैं।

(शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 जून - 05 जुलाई 2026

सक्सेस के नशे और ईगो से दूरी ही असली लाइफस्टाइल है : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मासभा में युगप्रधान की देशना; —टैलेंट या किसी भी अचीवमेंट का कभी शो-ऑफ़ और दुरुपयोग न करें

लाडनूं।
20 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर की भव्य सुधर्मासभा में "मनुष्य जन्म सुलब्ध बने" विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने गृहस्थों और युवाओं को साधु-संवाद की सार्थकता समझाते हुए जीवन को दिखावे से दूर रखने का पाठ पढ़ाया।

संवाद की सार्थकताः सफलता से कहीं बड़ा है जीवन का 'सुफल' होना– आचार्य प्रवर ने रोज़मर्रा की बातचीत और जीवन के असली लक्ष्यों का गहरा विश्लेषण किया।

१. साधु से बातचीत बदल देती है लाइफ : गृहस्थ दिनभर में कई लोगों से बातें करता है, पर जब उसे किसी संत से धार्मिक चर्चा करने और संबोध पाने का अवसर मिलता है, तो उसका वार्तालाप सफल हो जाता है। साधुओं का आपस में तत्व बोध और अच्छी शिक्षा के लिए किया गया संवाद भी श्रेष्ठ है।

२. उपलब्धियों का न करें मिसयूज़ : साधना से कई लब्धियां और सिद्धियां मिल सकती हैं, पर मुख्य अचीवमेंट वीतरागता, निष्कषाय भाव और समता है। साधु हो या गृहस्थ, किसी को भी अपनी शक्तियों या योग्यताओं का अनावश्यक प्रदर्शन और दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

३.सबसे बड़ा भाई है धर्म : त्याग और संयम मय जीवन जीने वाला व्यक्ति धर्म को पाकर सनाथ हो जाता है। यदि हम सच्चे दिल से जिन धर्म की आराधना करें, तो धर्म हमारे जीवन में सबसे बड़ा भाई और संकट में सबसे बड़ा मददगार बनकर साथ खड़ा होता है।

तीर्थंकर और केवली का भेद तथा आचार्य भिक्षु का संकल्प– शांतिदूत ने आगम के आलोक में आध्यात्मिक मार्ग को रेखांकित किया।

> अध्यात्म का मार्ग चुनना मानो जीवन की सबसे बड़ी लॉटरी लग जाना है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. तीर्थंकरों की पुण्य वत्ता : तीर्थंकर और केवली दोनों ही वीतराग होते हैं, लेकिन तीर्थंकरों की पुण्य वत्ता विशेष होती है। वे समाज कल्याण के लिए स्वयं 'प्रवचन' (देशना) देते हैं जिससे लाखों को लाभ मिलता है, जबकि केवली के लिए व्याख्यान होता है। आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रवचनों से भी अनगिनत लोगों का कल्याण हुआ।

२. तेरापंथ धर्मशासन की नींव : सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना से ही मानव जीवन सुफल बनता है। आद्य आचार्य श्री भिक्षु ने कंटालिया गांव में जन्म लेकर धर्म के मार्ग पर कदम बढ़ाए और नव्य भव्य दीक्षा लेकर एक नए पंथ की शुरुआत की, जिससे आज का तेरापंथ धर्मशासन संचालित हो रहा है।

पूर्व मंत्री सत्येन्द्र जैन की उपस्थिति और महिला मंडल का 'शिखरोत्सव'– मंगल कार्यक्रम में विशेष रूप से दिल्ली के पूर्व कैबिनेट मंत्री सत्येन्द्र जैन उपस्थित हुए और अपनी भावाभिव्यक्ति देकर आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके साथ ही, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'शिखरोत्सव' कार्यक्रम का मंचीय उपक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर मंडल की संरक्षिका पुष्पा बैंगानी, राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा व सुमति चंद गोठी ने अपने विचार रखे।

> जीवन में केवल धन या पद पा लेना सफलता हो सकती है, लेकिन जब जीवन में वीतरागता, समता और बिना गुस्से का भाव आ जाए, तो जीवन सुफल यानी बेस्ट बनता है

आचार्यश्री ने अपने कर-कमलों से मुनि निकुंज कुमार जी व मुनि आगम कुमार जी को महिला मंडल के छह वर्षीय पाठ्यक्रम से जुड़े प्रमाण पत्र प्रदान किए और स्वाध्याय को सबसे बड़ा धर्म बताते हुए ज्ञान क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

साध्वी जिन प्रभा जी और साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने भी अपने उद्बोधन में 'आचार्य श्री तुलसी शिक्षा परियोजना' के तहत तैयार हो रहे तत्वज्ञ श्रावक-श्राविकाओं और साधु-साध्वियों की सराहना की।

राजनीति पर धर्म का 'ब्रेक' ही 'रामराज्य' की पहली शर्त : आचार्यश्री महाश्रमण

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर युगप्रधान की देशना;—पद मिलने के बाद ऐशो-आराम में डूबना जीवन की सबसे बड़ी विफलता है

लाडनूं।
21 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्त्रा, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती के सुरम्य परिसर में "अनाथों के नाथ बनो" विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम में वर्णित राजा श्रेणिक व अनाथी मुनि के संवाद के माध्यम से अमृत देशना प्रदान की। अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के विशेष मौके पर परिसर में आयोजित सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम में भी पूज्य प्रवर ने स्वयं पहुंचकर उपस्थित जनमेदिनी को योग और स्वस्थ जीवन की पावन प्रेरणा दी।

राजनीति और धर्मनीति का संतुलनः स्वार्थ और भेदभाव से मुक्त हो सिस्टम– आचार्य प्रवर ने राजनीति के क्षेत्र के महानायक राजा श्रेणिक और धर्म जगत के महान निर्ग्रन्थ अनाथी मुनि के मिलन को रेखांकित करते हुए देश की शासन व्यवस्था पर बोध दिया।

१. धर्म के विधान से चले शासन : राष्ट्र के संचालन के लिए राजनीति आवश्यक है, लेकिन राजनीति हमेशा धर्म, अहिंसा, नैतिकता, सद्भावना और निष्पक्षता के सिद्धांतों से संचालित होनी चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थ, अनैतिकता और पक्षपात लोकतंत्र को कमजोर करते हैं।

२. भेदभाव का हो अंत : शासन-प्रशासन में जाति, मजहब या आर्थिक असमानता के आधार पर नागरिकों के साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। यदि समाज में कोई अपराध होता है, तो अपराधी को कानून के दायरे में सजा देने का कार्य सिर्फ और कोर्ट (न्यायपालिका) का है।

लोकतंत्र बनाम राजतंत्रः ऐशो-आराम में डूबने वाले राजाओं पर सीधा प्रहार– शांतिदूत ने संस्कृत साहित्य का उदाहरण देते हुए सत्ता के नशे में चूर रहने वाले

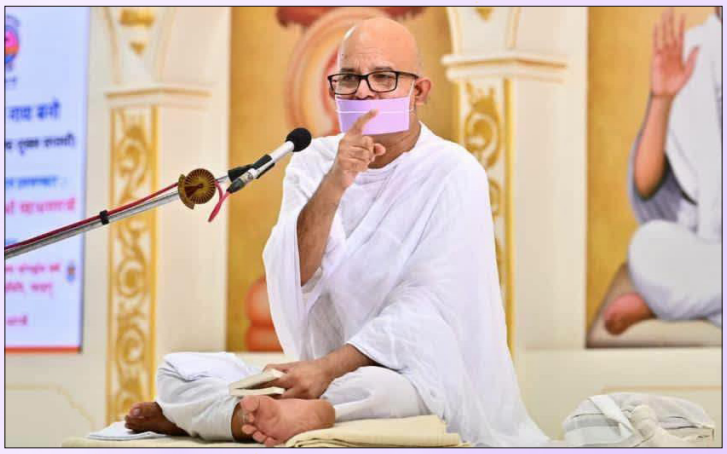

कप्तानों को आईना दिखाया।

१. प्रजा की सेवा ही एकमात्र लक्ष्य : चाहे लोकतांत्रिक प्रणाली हो या प्राचीन राजतंत्रीय व्यवस्था, दोनों का एकमात्र लक्ष्य प्रजा को सुखी रखना, देश में अच्छी व्यवस्था बनाना और राष्ट्र का विकास करना है। पहले चक्रवर्ती, वासुदेव और प्रतिवासुदेव की व्यवस्था थी, जबकि आज जनता के द्वारा, जनता के लिए और जनता पर शासन की लोकतांत्रिक प्रणाली लागू है।

२. बकरी के गले के स्तन जैसा जीवन : जो राजा या नेता पद पर आने के बाद जनता की सुख-सुविधाओं को भूलकर सिर्फ अपने ऐशो-आराम में डूबा रहता है, उसका जन्म संस्कृत साहित्य के अनुसार उसी प्रकार निरर्थक है, जैसे बकरी के गले में लटका हुआ स्तन (जिसका कोई उपयोग नहीं होता)। अच्छे लीडर्स को हमेशा जनता की ज़रूरतों का आकलन कर उन्हें पूरा करना चाहिए।

> राजनीति में जब तक पर्सनल स्वार्थ रहेगा, तब तक व्यवस्था अधूरी है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

अहिंसा महाव्रतः ऐसे बनें बेजुबानों और अनाथों के नाथ– पूज्य प्रवर ने अध्यात्म और व्यावहारिक जीवन को जोड़ते हुए कहा कि धर्मनीति का मूल मंत्र ही अनाथों का नाथ बनना है। इसके लिए इंसान को षट्जीव निकाय के जीवों की हिंसा का पूरी तरह त्याग करना होगा।

जो साधु अहिंसा के महाव्रत का पालन करते हैं, वे सृष्टि के समस्त बेजुबान जीवों को अभयदान देकर वास्तव में अनाथों के सच्चे नाथ बन जाते हैं।

दायित्व बोध ग्रहण समारोह का भव्य आयोजन

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर का सत्र 2026-27 का दायित्व बोध ग्रहण समारोह युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, राजाजीनगर में जैन संस्कार विधि के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ पंच परमेष्ठी नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। जैन संस्कारक सतीश पोरवाड़ एवं रनित कोठारी ने विभिन्न मंगल मंत्रोच्चारों के साथ जैन संस्कार विधि को संपन्न करवाया। दायित्व बोध ग्रहण समारोह के द्वितीय सत्र में तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम के सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया।

तत्पश्चात अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष जितेश दक ने सभी अतिथियों एवं उपस्थितजनों का स्वागत करते हुए नवमनोनीत अध्यक्ष राजेश देरासरिया को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवमनोनित अध्यक्ष राजेश देरासरिया ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष प्रथम कमलेश गन्ना, उपाध्यक्ष द्वितीय सुनील मेहता, मंत्री जयंतीलाल गांधी, सहमंत्री प्रथम अनिमेष चौधरी, सहमंत्री द्वितीय जीतू मेहता, संगठन मंत्री योगेश मेहता, कोषाध्यक्ष कुनाल गन्ना, प्रचार-प्रसार एवं मीडिया प्रभारी भावेश बोथरा तथा कार्यसमिति सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। साध्वी पावनप्रभाजी ने मंगल उद्धबोधन प्रदान करते हुए अध्यक्ष पद के दायित्वों, संघ एवं संगठन के प्रति मर्यादाओं तथा गुरु इंगित के अनुरूप कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। साथ ही।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने शुभ-मंगलकामनाएं संप्रेषित करते हुए परिषद को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का आवाहन किया एवं परिषद के कार्यो को सजगता, समर्पण एवं अच्छी निष्पति से करने के लिए कहा। अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष युवा गौरव विमल कटारिया, अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने नवगठित टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर परिषद द्वारा आयोजित किए जाने वाले योगा से होगा 3.0 का बैनर अनावरण भी किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन अनिमेष चौधरी ने किया।

शिखरोत्सव

आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना रजत जयंती समारोह प्रथम सत्र : "शुभमस्तु मंगलम्"

लाडनूं।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के सान्निध्य में आयोजित "शुभमस्तु मंगलम्" सत्र श्रद्धा, शिक्षा एवं संस्कारों का प्रेरणादायी संगम रहा। प्राकृत मंगलाचरण के साथ शिखरोत्सव कार्यक्रम का आगाज़ अभातेममं अध्यक्ष सुमन नाहटा एवं महामंत्री रचना हिरण ने किया। चीफ ट्रस्टी कनक बरमेचा ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा संरक्षिका सायर बैंगानी ने आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना की 25 वर्षीय गौरवगाथा प्रस्तुत की।

"श्रद्धा से शिखर की यात्रा" वीडियो के माध्यम से परियोजना की विकास यात्रा का अवलोकन कराया गया। तत्वज्ञान, तत्वविज्ञ एवं तेरापंथ दर्शन पाठ्यक्रमों को पूर्ण करने वाले १०० से अधिक साध्वियों और श्रमणियों का यह भव्य दीक्षांत समारोह सभी के आकर्षण का केंद्र रहा। शासन श्री साध्वी जिनप्रभा जी ने परियोजना के इतिहास एवं विकासक्रम पर प्रकाश डालते हुए इसके उज्ज्वल भविष्य हेतु मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं। वर्षों से इस परियोजना के प्रायोजक रहे सुमति गोठी ने भी अपने प्रेरक व्यक्त किए।

अभातेममं ट्रस्टी सोनाली पटावरी द्वारा प्रस्तुत पॉडकास्ट को भी विशेष सराहना प्राप्त हुई।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने तत्वज्ञान के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि तत्वज्ञान व्यक्ति के मन में पाप का भय जागृत कर उसे सदाचार की दिशा में अग्रसर करता है। उन्होंने इस आयोजन को "ज्ञान का महायज्ञ" बताते हुए सभी उपस्थित चारित्रात्माओं को साधुवाद प्रदान किया तथा आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना एवं अभातेममं की गतिविधियों के निरंतर विकास हेतु मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं।

अभातेममं के पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की संयोजिका राजुल मणोत ने सत्र का कुशल संचालन किया। यह सत्र सभी सहभागियों के लिए अविस्मरणीय एवं प्रेरणादायी अनुभव सिद्ध हुआ।

परिवार प्रबोधन कार्यशाला का सफल आयोजन

अहमदाबाद उत्तर।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद के तत्वावधान में मोटेरा तेरापंथ भवन के मुख्य प्रांगण में परिवार प्रबोधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें 'रिश्तों में भरें नई उड़ान' की शानदार प्रस्तुति दी गई है। पूरे अहमदाबाद में अच्छी संख्या में महिलाओं एवं भाईयों की उपस्थिति रही। केसरिया परिधान में पंक्तिबद्ध बैठी महिलाएं परिषद की शोभा बढ़ा रही थीं।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा - परिवार रूपी रथ रिश्तों की धुरी पर टिका हुआ है। रिश्ते जितने प्रगाढ़ होंगे, परिवार रूपी रथ उतनी ही तेज गति से दौड़ेगा। आजकल लोग संबंध भी फायदा देखकर बनाने लगे हैं।

पुराने लोग भावुक थे तब वो रिश्तों को संभालते थे। बाद में लोग प्रैक्टिकल हो गए तब वो संबंधों का फायदा उठाने लग गए अब तो लोग प्रोफेशनल हो गए फायदा अगर है तो ही संबंध बनाते हैं। अगर घर-परिवार में यह भावना आ गई तो परिवार विकास की उड़ान नहीं भर पाएगा। रिश्तों में सम्मान की भावना होनी चाहिए। परिवार में अहम रिश्ता माँ-बाप का होता है। माँ-बाप को ऑनलाईन नहीं ऑफलाईन सम्मान दो क्योंकि उन्होंने आपको जन्म दिया है, डाऊनलोड नहीं किया है। रिश्तों में प्रेम, अपनत्व की भावना होनी चाहिए। वाणी में माधुर्य रिश्तों को नई पहचान देता है। सोच, समझ व विवेक की त्रिपदी रिश्तों में नई उड़ान भर सकती है। साध्वी श्री जी ने कहा - सुशीला खतंग के नेतृत्व में महिला मंडल अहमदाबाद अच्छा काम कर रही है। बहनों की भव्य उपस्थिति मंडल की जागरूकता को दर्शा रही है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा - जिस परिवार में प्रेम को महत्त्व दिया जाता है तो वो परिवार चित्राबेल की तरह बढ़ता है। साध्वी समत्वयशा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी डॉ. सुप्रभा जी ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने किया। मंगल संगान महिला मंडल की बहनों ने किया। अध्यक्ष सुशीला जी खतंग ने विचार व्यक्त किए। अ.भा.म.मं. की कार्यकारिणी सदस्या वर्षा लुणिया ने विचार रखे। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सरिता लोढ़ा ने किया। कार्यक्रम में बहनों को सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 जून - 05 जुलाई 2026

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

30वां महाप्रयाण दिवस

– आचार्यश्री तुलसी

निवर्तमान होकर भी वर्तमान में हैं गुरू तुलसी

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

अध्यात्म जगत के उज्ज्वल नक्षत्र, भारतीय ऋषि परम्परा जैन परम्परा में वैडुर्यमणि, तेरापंथ धर्मसंघ को ऊचाईयां प्रदान कराने वाले, एक महान् युगपुरूष थे-आचार्य श्री तुलसी। तुलसी एक ऐसा नाम-जिनका स्मरण मात्र व्यक्ति को समाज और राष्ट्र में अपनी नई पहचान बनाने के लिए प्रेरित करती है। उनका अतिशय-वचनातिशय आभामंडल आकर्षक तथा अनिवर्चनीय आनंद देने वाला था। उनका सम्पर्क, उनके साथ वार्तालाप-संवाद करने वाला चाहे वो किसी भी सम्प्रदाय का क्यों न हो हमेशा के लिए उनके चरणों को अपने आचरण का केन्द्र बिन्दु मानने के लिए मजबूर हो जाया करता था। या यों कहा जा सकता है वो अपने दिल में तुलसी की छवि को हमेशा के लिए स्थापित कर लेता था क्योंकि उनका वरद हस्त, आत्मीय भाव, स्नेहिल दृष्टि उसके जीवन का रूपान्तरण में निमित्त बन जाता था-ऐसे थे आचार्य श्री तुलसी।

वर्तमान युग की समस्याओं का निराकरण करना वे बखूबी जानते थे। उनके बोधपाठ में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की हर समस्या का समाधान था। कहा जा सकता है वे समाधायक पुरूष थे। युवापीढ़ी और भावी पीढ़ी, किशोरपीढ़ी को आगे बढ़ाना, संस्कारित करना उनका ध्येय था। उनके सफल जीवन के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते थे। युवापीढ़ी को सफल जीवन के लिए उनको अग्रिम पंक्ति में लाने के लिए कुछ टिप्स दिए। लक्ष्य निर्धारण, आत्मविश्वास, दृढ़संकल्प, सम्यक् पुरूषार्थ, सहिष्णुता, व्यसनमुक्त जीवन प्रत्येक युवा किशोर आत्मसात करे। क्योंकि आज की बाल पीढ़ी युवा पीढ़ी ही परिवार समाज और राष्ट्र का भविष्य है। राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य इन्हीं के मजबूत कंधों पर है। उनका कथन था धर्मसंघ को शक्तिशाली बनाने में युवक अपनी शक्ति का सम्यक् नियोजन करे। वे पदलिप्सा, महत्वाकांक्षा की दौड़ से दूर रहे। उनकी नजरों में युवाशक्ति आज फैशन और नशे की गिरफ्त से दूर रहकर ही स्वयं और समाज का भला कर सकती है।

यद्यपि वे एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य अवश्य थे पर उनका दूरगामी चिन्तन मानवीय धरातल पर था। इसीलिए उन्होंने न केवल जैन तेरापंथ अपितु प्रत्येक धर्म-सम्प्रदाय को सम्मुख रखकर अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसे राष्ट्र विकास के अवदान देकर मानवीय एकता राष्ट्र एकता को मजबूती प्रदान की। राष्ट्र की हर इकाई को जोड़ने का सार्थक प्रयास और पुरूषार्थ किया। उनका देह तो नहीं पर उनके विचार, उनके अवदान, उनके कार्य आज भी जीवित है तो मानना होगा कि आचार्य तुलसी जिन्दा है और हमेशा जिन्दा रहेंगें। व्यक्ति हमेशा जिन्दा नहीं रहता पर उसका व्यक्तित्व, कर्तृत्व, अवदान जीवित रहते है। जो उसको भी व्यक्ति-व्यक्ति के दिलों में जीवन्तता प्रदान करते रहते है। आचार्य तुलसी के जीवन में आन्तरिक और बाह्य अनेक संघर्ष आए पर वे संघर्षों की आग में तपकर निखरते गए। तपकर ही सोना निखार को प्राप्त होता है। उसकी चमक बढ़ती जाती है। उसी तरह आचार्य तुलसी भी संघीय, समाज और राष्ट्रीय स्तर पर संघर्षों की ताप में तपकर सदैव निखार को प्राप्त करते रहे। इसीलिए तो संघीय, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर अनेक सम्बोधन विशेषण प्राप्त होते रहे। और धर्मसंघ के साथ वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान मिली। ऐसे महामानव के बारे में जितना कहा जाए-लिखा जाए कम ही होगा। उनकी पुण्यतिथि पर सदैव उनके द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलना ही उनकी पुण्य स्मृति होगी। अन्त में उनका नाम था तुलसी।

तुलसी का पौधा बड़ा ही गुणकारी होता है। वैसे ही ज्ञानवान, गुणवान, भगवान की महान आत्मा तुलसी को शत-शत नमन।

जैनियों और तेरापंथियों का ही नहीं जन-जन का कल्याण किया गुरुदेव तुलसी ने

● मुनि कमल कुमार ●

आचार्य श्री तुलसी एक पंथ के आचार्य होते हुए भी उन्होंने जन कल्याण के लिए जो अनवरत कार्य किये वे सबके लिए प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय हैं। इसीका सुपरिणाम मान सकते हैं कि उनके पावन सान्निध्य में हर पंथ के संत महंत हर वर्ग के अग्रणी नेता चाहे वे राजनीति से जुड़े हों या उद्योग जगत से जुड़े हो बड़ी ही आत्मीयता से आते। उपासना से प्राप्त सद् उपदेश को अपने जीवन में ही नहीं अपने सम्पर्क में आने बालों को भी बताते कि इन्हें आत्मसात करो जिससे जीवन जीने का आनंद आ सके। गुरुदेव के मुख्य तीनों आयाम अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जितने जैनी और तेरापंथियों के लिए उपयोगी सिद्ध हुए उतने अन्य लोगों के लिए भी उपयोगी बने हैं। तेरापंथ का सौभाग्य है कि तेरापंथी लोगों को समयानुसार आचार्य प्राप्त होते रहे हैं जिससे यह धर्म संघ उत्तरोत्तर गतिमान बना हुआ है। इस संघ के प्रथम आचार्य आचार्य भिक्षु हुए उन्होंने संघ विकास के लिए एक गुरु एक विधान जो मर्यादा बनाई वह आज भी सैकड़ों वर्षों बाद भी अक्षुण्ण रूप से चल रही है। इस संघ की बड़ी विशेषता है कि आचार्य द्रव्य, क्षेत्र, काल ओर भाव के अनुसार चलते हैं यही महावीर का अनेकांत है। ऐसा ही नहीं ऐसा भी हो यह चिंतन व्यक्ति को सदा उन्नत बनाने वाला है। आठ आचार्यों ने जो परिवर्तन नहीं किया वह आचार्य श्री तुलसी ने किया परन्तु उसका अधिकांश सर्वत्र स्वागत ही हुआ है तभी यह धर्मसंघ देश विदेश में अपनी पहचान बना पाया है। आचार्य श्री तुलसी ने हर वर्ग हर वर्ण के उत्थान का कार्य बिना किसी स्वार्थ के किया। उन्हें कोई वोट, नोटओर प्लॉट की आवश्यकता नहीं थी बल्कि हर व्यक्ति अमन-चैन की जिंदगी जीये जिससे परिवार समाज राष्ट्र और विश्व का कल्याण हो सके। उनका चिंतन था कि सम्प्रदाय भले भिन्न हो, परंतु व्यक्ति के दिल दिमाग में साम्प्रदायिकता हावी न हो। कैसे व्यक्तियों का जीवन स्वच्छ सरल सरस बने जिससे आपसी वैमनस्य न बढ़े। इसके लिए उन्होंने अनेक प्रयास किये और अधिकतर प्रयास सफल रहे।

आज हम जब अन्य संप्रदाय के अग्रणियों के साथ कार्यक्रम करते हैं तब यह स्वर सुनने मिलता है कि आचार्य श्री तुलसी एक सिद्ध पुरुष थे जिन्होंने भाईचारा का माहौल बनाया जो स्वस्थ समाज राष्ट्र के लिए नितांत आवश्यक था। हम उनके पुण्य दिवस पर यह मंगल कामना करते हैं कि आपके बताये हुए मार्ग का दृढ़ निष्ठा से सदा अनुकरण करते रहेंगे।

नैतिकता का संवाहक

● मोहन भन्साली ●

नैतिकता के संवाहक ने, गांव गांव, शहर शहर,
चरैवेति चरैवेति मंत्र को चरितार्थ कर,
स्नैतिकता की पुनः प्रतिष्ठास का संदेश दिया।

नैतिकता के संवाहक ने, जन-जन के कल्याण में,
अणुव्रत आंदोलन का शंखनाद कर,
आजाद भारत को चरित्र निर्माण का मंत्र दिया।

नैतिकता के संवाहक ने, बदलते परिवेश में,
बेड़ियों से जकड़ी नारी का उत्थान कर,
समाज कल्याण में, गगनचुंबी पंख लगा दिया।

नैतिकता के संवाहक ने, संघीय संपदाओं में,
दीक्षा, शिक्षा और कलात्मक विकास कर,
आध्यात्मिक वैभव का नव इतिहास बना दिया।

नैतिकता के संवाहक ने, भौतिकवाद की चकाचौंध में,
स्संयमः खलु जीवनम्स को आत्मसात कर,
बाहर से भीतर यात्रा का प्रकाशपुंज दिया।

नैतिकता के संवाहक ने, मानवीय मूल्यों की रसधारा में,
साहित्य जगत को उपकृत कर,
आगम संपादन से आलोकित प्रकाश दिया।

नैतिकता के संवाहक ने, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में,
समण, उपासक, जैन संस्कारक श्रेणी का उद्भव कर,
सात समंदर पार महावीर का अनेकांत दर्शन दिया।

महाश्रमण के भाग्य विधाता ने,
भिक्षु तपोवन में शिष्य को सम्राट बना,
काम, क्रोध, मद, मोह पर प्रहार कर,
कालजयी श्री तुलसी ने,
अहं से अर्हं बनने का पथ अंगीकार किया।।

मस्त फकीरी पर है नाज

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

संघ सुमेरु महान सृजनहार, तुम्हें नमन है बार हजार।

संघ नायक संघ के सरताज, तुम्हारी मस्त फकीरी पर है नाज,
दुनिया याद रखेगी आज, सदियों गूंजेगी युगीन आवाज।
अंतरमन के रचनाकार, कौन सा चढ़ाऊ उपहार,
तुम्हें नमन है बार हजार।।

ज्ञान दाता भाग्यविधाता, श्रेयस्कर नवम् अधिष्ठाता,
आगम के अनुसंधाता, गणनंदन के नवोन्मेष निर्माता,
विलक्षण चिंतक विश्व विख्याता, प्रवचन पटुता के व्याख्याता,
दीपित भाल दीदार, हर संकल्प बना साकार,
तुम्हें नमन है बार हजार।।

सोई शक्ति जगाई तुलसी ने, सत्य साधना सिखाई तुलसी ने,
अणुव्रत का संदेश दिया तुलसी ने, अभ्युदय का द्वार खोला।
नूतन इतिहास रचा तुलसी ने, संघर्षों से कभी न मानी हार,
तुम्हें नमन है बार हजार।।

फूल गुलाब सी कोमल काया, चार तीर्थ पर था आपका साया,
कल्पतरु सी मिली सुखद छाया, तुलसी जिसमें जिसने मन लगाया,
उसने सब कुछ पाया ही पाया, हे जन-जन के तारणहार,
तुम्हें नमन है बार हजार।।

कलुष निकंदन वदना नंदन, चरणों में करते अभिनंदन,
सकल विश्व के तीर्थ धाम, गुण परिमल पावन सुखराम,
अनुपम, अतुल, अभूतपूर्व आनंद, कर दो भवसागर पार,
तुम्हें नमन है बार हजार।।

❖ श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।
– आचार्य श्री महाश्रमण

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

आचार्य तुलसी : नेतृत्व का दिव्य आलोक और अणुव्रत का नैतिक पुनर्जागरण

● साध्वी संघ प्रभाजी ●

आचार्य तुलसी भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के एक ऐसे अद्वितीय महापुरुष थे, जिनका चिंतन धर्म की संकीर्ण सीमाओं से परे समस्त मानवता के कल्याण के लिए था।

तेरापंथ के नवें आचार्य के रूप में उन्होंने सबसे दीर्घकालीन शासनकाल संभाला, जिसकी विशेषता अलौकिक नेतृत्व, नैतिक पुनरुत्थान और चरित्र-क्रांति में निहित थी,उन्होंने धर्म को परंपरागत कर्मकांडों से मुक्त कर जीवन की सहज नैतिकता और व्यवहार से जोड़ा।

१. आचार्य तुलसी का नेतृत्व : आदर्श और अनुशासन का अद्वितीय सम्मिलन– मात्र 22 वर्ष की आयु में आचार्यपद स्वीकार करने वाले इस युवा साधु का नेतृत्व किसी धार्मिक सत्ता का नहीं, बल्कि उच्च आदर्शों का नेतृत्व था,उनका दृढ़ विश्वास था कि नेतृत्व किसी पद से नहीं, बल्कि स्वयं के चरित्र और सत्यनिष्ठा से जन्म लेता है।

वे परंपरा के संरक्षण के साथ-साथ आधुनिकता के पक्षधर थे; उनके अनुसार धर्म को काल के साथ निरंतर संवाद करना चाहिए। वे लोगों के द्वंद्वों और भ्रमों को धैर्य व सहानुभूतिपूर्वक सुनकर तर्कसंगत समाधान देते थे, जिसके कारण वे एक लोक-धर्मगुरु बन गए।

२. चातुर्विध संघ का पुनर्जागरण : संगठनात्मक नेतृत्व का स्वर्णिम अध्याय– आचार्य तुलसी के कुशल नेतृत्व में तेरापंथ का चातुर्विध संघ (साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका) एक अभूतपूर्व ऊँचाई पर पहुँचा।

साधु-साध्वी संघ का सुदृढ़ीकरण: संघ में अनुशासन, साधना और ज्ञान-विस्तार के लिए नए शिक्षण-केन्द्र स्थापित किए गए और उन्हें चरित्र-निर्माण का दूत बनाया गया।

श्रावक-श्राविका जीवन में नैतिक चेतना : उन्होंने श्रावक समाज को केवल अनुयायी न मानकर धर्म का सजीव विस्तार माना और अणुव्रत के माध्यम से जीवन में संयम व ईमानदारी का आग्रह किया।

आधुनिक प्रबंधन : यात्राओं, समितियों और नियमित अध्ययन-प्रवचन की सुव्यवस्थित व्यवस्था करके उन्होंने धार्मिक संघ को आधुनिक काल की सामाजिक व आध्यात्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला।

३. अणुव्रत आंदोलन : युग परिवर्तन की नैतिक क्रांति – आचार्य तुलसी का सर्वश्रेष्ठ अवदान 'अणुव्रत आंदोलन' था, जो किसी जाति या संप्रदाय विशेष के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए था. इसका मूल मंत्र था—=छोटे-छोटे व्रत, परंतु महान परिवर्तन=, जब देश जातीय संघर्षों, भ्रष्टाचार और सामाजिक विभाजन से ग्रस्त था, तब उन्होंने संदेश दिया कि यदि धर्म जीवन नहीं बदलता तो वह प्रगति का विषय नहीं है। अणुव्रत का वैश्विक उद्देश्य किसी को जैन बनाना नहीं, बल्कि मनुष्य को एक श्रेष्ठ मनुष्य बनाना है।

४. संयमय जीवन और साहित्य : दर्शन– आचार्य तुलसी के जीवन का सर्वोच्च आदर्श संयम था, जिसे वे मन की स्वतंत्रता और आत्मा की पवित्रता मानते थे, इसके साथ ही वे एक गंभीर चिंतक, कवि और समाज-सुधारक भी थे।उनका साहित्य और रचनाएँ केवल जैन धर्म की व्याख्या नहीं करतीं, बल्कि कर्तव्य, सत्य और धर्म जैसे जीवन के शाश्वत प्रश्नों का सरल व तार्किक समाधान प्रस्तुत करती हैं।

महामहिम ने मुझे जगाया

● साध्वी विनययशा ●

अष्टसम्पदा जिनवाणी की दीप्ति शोभित नवमासन में ॥
श्रद्धा भक्ति का गुलदस्ता अर्पण करते पूज्य चरण में ॥

साधना के शिखर पुरुष को भाव भरा प्रणाम है
तुलसी तुलसी ॐ जय तुलसी जपते आठों याम है
अष्ट सिद्धियों नौ निधियों बसती वदना नंदन में ॥

अणुव्रतों का बिगुल बजाया, प्रेक्षा का जय ध्वज लहराया
जीवन विज्ञान से भाग्य सजाया, नए मोड़ से जग में छाया
दिव्य फरिश्ता तुलसी गुरुवर, उतरा भिक्षु नंदनवन में ॥

कार्यकर्ता अनगिन बनाए, रत्नत्रयी से जग हरसाए
सम्यक्त्व दीप कितने जलाए, पतितों के पावन कहलाए
वाह वाह धन्य धरा सपूत, हम आए तुलसी शरण में ॥

परमपुरुष ने मुझे जगाया, सौभाग्य का सूरज उगाया
साध्वी बना वरदान दिलाया, असीम उपकार छत्र छाया
प्रकाशपुंज तेरा ही सबकुछ, गूंज रही ध्वनि कण कण में ॥

जीवनपथ में हो उजियारा, आशीर्वाद दो गुरूवर प्यारा
निर्मल निश्छल जीवनधारा, चमक उठे किस्मत सितारा
अहम् आत्मा का अभ्युदय, करना मुझको तव शरण में ॥

अखिल विश्व में छाए तुलसी

● शासनश्री साध्वी पानकुमारी (प्रथम) ●

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई प्राणवान की पुण्य शरण में।
शत शत शीश झुकाते गुरु को अर्पण करते पूज्य चरण में॥

मानस रूपान के दुलारे झूमरमलजी के मनहारे।
खेदड़ कुल के महासूरज वंदनाजी के नयन सितारे॥
चंदेरी के चाँद सलोने छाए जैन अर्जन सुधोजन में।

अनुभवों की दिव्य सम्पदा रम्य सुरम्य नव उधोत।
जीवन शैली जगमग ज्योति वीरवाणी के जो भवपोत॥
कालगणि से शिक्षा दीक्षा आत्मसमीक्षा क्षण बचपन में।

चिंता नहीं चिंतन करो महाप्राण के अनुपम बोल।
व्यथा नहीं व्यवस्था हो जीवन बन जाए अनमोल॥
प्रशस्ति नहीं प्रस्तुति करो आत्मविजय प्रतिपल कण-कण में।

कलाकार साहित्यकार भाष्यकार भिक्षु दर्शन के।
आगम संपादन अनूठा ज्ञाता द्रष्टा अनुशीलन के॥
जीवन में संगीत गूंजता संगीतकार के पद वंदन में।

तपोयोग प्रतिबिम्बित प्रभु में बालयोग का नव आलोक।
भक्तियोग से दीपित कण-कण साम्ययोग का अद्भुत योग॥
निज पर शासन फिर अनुशासन देखा जगाने हर चिंतन में।

कब से बाट निहारे ....तुलसी

● डॉ० साध्वी परमयशा ●

कब से बाट निहारे पधारो गण सरताज
दर्श दिखावो, आश पुरावो महाप्राण गुरुराज।

जीवन तुम्हारा भगवन अजब पहेली,
गीता के कृष्ण मुरारी अद्भुत शैली
आगम के महावीर है तीर्थंकर अंदाज।

ज्योति जलाओ भगवन हृदय में हमारे,
मैत्री की पावन गंगा कल्मष परवार
भारत पुण्यधरा को युगप्रधान पर है नाज।

आगम सम्पादन है देन निराली,
साहित्य सरिता ज्ञानामृत की खुशहाली
नई 'सदी' ने पाया मंजुल मनोहर राज।

अणुव्रत की साधना को नमन हमारा,
सुरभित रोशन करता जीवन की धारा
प्रेक्षा प्रज्ञा परिमल है मंजिल का मिजाज।

नया मोड़ नारी जग के हौसलों की जीत है,
जैन विश्वभारती से सारे जग को प्रीत है
यूनिवर्सिटी यूनिक है सफलता का ताज।

पात्रा संस्था मुमुक्षु अनमोल उपहार
समण श्रेणि से हुआ विस्मित संसार
कुर्सी के इस युग में पद विसर्जन सुख ताज।

चंदेरी चंदा प्यारे, माँ वदना के नन्दन

● साध्वी ऋजुयशा ●

चंदेरी चंदा प्यारे, माँ वदना के नन्दन,
तुलसी की यशोगाथा, गाते हैं धरा-गगन ॥

अमृत बांटा जग को, शंकर बन जहर पिया,
युगद्रष्टा ने युग को, नूतन आकार दिया - २
लाखों-लाखों भक्तों, की तुम ही हो धड़कन ॥
तुलसी की यशोगाथा...

सारी दुनियाँ में तुम, चमके बन ध्रुवतारे,
अवदान दिए जो भी, वरदान बने सारे - २
अणुव्रत आन्दोलन का, जग करता अभिनन्दन ॥
तुलसी की यशोगाथा...

स्वर्णिम युग तुलसी का, गणमहिमा महकाई,
पट्टधर महाप्रज्ञ-सी, चिन्तामणि है पाई - २
अनुपम थी वह जोड़ी, याद करे जन-जन ॥
तुलसी की यशोगाथा...

उपकार तेरा कितना, कैसे हम बतलाएं,
इक रसना से अनन्त, गुण कैसे हम गाएं - २
महायोगी महाश्रमण, में होते तव दर्शन ॥
तुलसी की यशोगाथा...

लय - जब कोई नहीं आता...

गुरु पुष्य दिव्य अनुष्ठान का भव्य आयोजन

सिकंदराबाद।

सिख रोड स्थित बांठिया गार्डन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी सहवर्ती संत मुनि काव्य कुमारजी के सानिध्य में तेरापंथी सभा सिकंदराबाद द्वारा गुरु पुष्य दिव्य अनुष्ठान का भव्य आयोजन किया गया।

इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में लगभग 450 श्रद्धालुओं की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही। इस अवसर पर मुनि दीप कुमार जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि गुरु पुष्य नक्षत्र भारतीय ज्योतिष एवं आध्यात्मिक परंपरा में अत्यंत शुभ एवं फलदायी माना गया है।

सभा अध्यक्ष सुशील संचेती सहित उनकी टीम, महासभा प्रभारी लक्ष्मीपत बैद, कार्यक्रम संयोजक हुकुमचंद कोटेचा, प्रकाश बोथरा, अरिहंत गुजरानी एवं खुशहाल भंसाली ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
29 जून - 05 जुलाई 2026

संबोधि

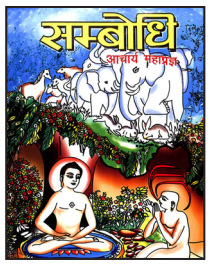

परिशिष्ट

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

'सोहं' का जप 'सो' का कण्ठ चक्र पर 'हं' का आज्ञाचक्र पर और 'म्' का सहस्रार चक्र पर तीनों समय जप करना चाहिए। इससे अंतर्मन और सुषुप्त मन जागृत होते हैं।

इस प्रकार अनेक मंत्र हैं। उन सबका उल्लेख संभव नहीं। साधक स्वयं अपनी रुचि के अनुसार या योग्य व्यक्ति के परामर्श से उन्हें ग्रहण करे।

मंत्र साधना की एक सरल विधि को और अपने ध्यान में रखें। वह इस प्रकार है-समय आधा घण्टे से एक घण्टे, तीनों समय, एकांत में। जिस मंत्र को सिद्ध करना चाहो उसे सुनहरे प्रकाश में हृदय में लिखा हुआ देखो। उच्चारण करना चाहो तो कर सकते हो। दृष्टि लक्ष्य को न छोड़े। एक महीने के पश्चात् मंत्राक्षर मिटते प्रतीत होंगे, दिव्य प्रकाश कभी-कभी सन्मुख आता प्रतीत होगा। कुछ दिन बाद अक्षर लुप्त हो जायेगा, केवल हृदय तेज से भरा जान पड़ेगा। उस तेज में एक मूर्ति की झलक आती जान पड़ेगी। यह मंत्र के देवता का रूप होता है। अभ्यास से और अधिक साफ होगी। देवमूर्ति प्रत्यक्ष सामने आ खड़ी हो तो प्रश्नों का उत्तर देगी, सहयोग करेगी। अनुष्ठान पूरा हो गया।

रूपस्थ ध्यान

रूपस्थ ध्यान का विषय है-दृश्य पदार्थ जो रूपवान्-आकृतिवान् है। जिसे साकार ध्यान भी कहा गया है। दृश्य पदार्थ में ध्याता इतना एकाग्र हो जाता है कि वह द्वैत का अनुभव नहीं करता। सुकरात रात में ताराओं को देखने में इतने खो गये कि उन्हें समय का कुछ पता ही नहीं चला। लोग खोजते हुए आये और कहा कब बैठे थे, क्या देखते हो? क्या है इनमें ? सुकरात ने कहा- क्या नहीं है इनमें? काश! आंखें होतीं देखने के लिए। लुकमान हकीम के औषधि आविष्कार वृक्षों की आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापना की ही घटना है। वृक्ष, वायु, पृथ्वी, जल सभी के पास भाषा है, किन्तु वह संवाद उसी समय हो सकता है जिस समय साधक बाहर से शून्य हो जाता है, उसके साथ एकत्व स्थापित कर लेता है।

एक घर में एक छोटे बच्चे का फोटो था। स्त्री गर्भवती हुई और उसने वैसा ही बच्चा पैदा किया। किसी ने पूछा-यह तो इस फोटो जैसा ही लगता है। मां ने कहा-मैं गर्भावस्था में इसी का ध्यान करती थी। बस यही रहस्य है। यह कोई असंभव घटना नहीं है। सब खेल ध्यान का है। जैसा आप चाहो वैसा बन सकते हो, शर्त है तीव्र ध्यान की।

प्रतिमा, इष्ट आदि पर ध्यान करना रूपस्थ ध्यान है। चित्त की एकाग्रता का यह सरल उपाय है। जैसे-जैसे वीतराग के साथ हमारा तादात्म्य होता चला जायेगा मूर्ति आकार खो जाएगा और उस भावधारा में डूबते चले जायेंगे। किन्तु यह घटना कोई एक क्षण में घटने वाली नहीं है। साधक में तीव्र अभिलाषा चाहिए। समय देना चाहिए और प्रतीक्षा करनी चाहिए। इष्ट साकार होता है।

रूपातीत

रूपातीत ध्यान के विषय में आचार्य शुक्लचन्द्र कहते हैं-रूपस्थ ध्यान में जब चित्त स्थिर हो जाता है, विकल्प विभ्रम क्षीण हो जाते हैं तब ध्याता को अमूर्त, अरूप, अजर और अव्यक्त का ध्यान प्रारंभ करना चाहिए। जो अमूर्त है वह चिदानन्दमय शुद्ध परम अविनाशी है। उस आत्मा का आत्मा के द्वारा ध्यान करना रूपातीत ध्यान है।' यह रूपातीत होते हुए भी कल्पना प्रधान तथा अमूर्त अदृश्य अवलंबन प्रधान है। इसमें ध्येय अन्य कोई न होकर आत्मा ही है। किन्तु यहां भी ध्याता ध्येय और ध्यान की त्रिपुटी बनी हुई है। जब तीनों की एकात्मकता होती है तब पूर्ण निरालंबन की स्थिति प्रकट होती है।

यह सालंबन और निरालंबन का संधि स्थान है। एक तरफ आलंबन है और दूसरी तरफ निरालंबन का प्रस्तुतीकरण है। यहां काम की पूर्णाहुति है, समस्त यौगिक विधियां शेष होती हैं। ध्यान के उपक्रमों में थका साधक विश्राम में डूबता है। यह अप्रयत्न होते हुए भी प्रयत्न, अक्रिया होते हुए भी क्रिया का वेग सर्वत्र सिमट कर स्वयं की दिशा में गतिशील हो जाता है।

इसलिए बहुत अधिक सक्रिय है। दूसरी दिशाओं में होने वाला प्रयास यहां नहीं रहता। **(क्रमशः)**

श्रमण महावीर

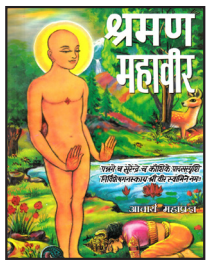

मुक्त मानस : मुक्तद्वार

'वह अभी रास्ते में चल रहा है। बहुत दूर नहीं है। तुम अभी-अभी थोड़ी देर में उससे मिलोगे।'

'भन्ते! क्या मेरा मित्र आपका शिष्य बनेगा?'

'हां, बनेगा।'

भगवान यह कह रहे थे, इतने में स्कंदक सामने आ गया। गौतम ने स्कंदक को निकट आते हुए देखा। वे तत्काल उठे और स्कंदक के सामने जाकर बोले - 'स्वागत है, स्कंदक! सुस्वागत है, स्कंदक! अन्वागत है, स्कंदक! स्वागत-अन्यागत है, स्कंदक!' गौतम के मुक्त व्यवहार ने स्कंदक को मैत्री-सूत्र में बांध लिया।

३. कृतिंगला के पास श्रावस्ती नगरी थी। वहां परिव्राजकों का एक आवास था। उसका आचार्य था गर्दभाल । स्कंदक उनका शिष्य था। उस श्रावस्ती में पिंगल नाम का निर्ग्रन्थ रहता था। एक दिन वह परिव्राजक-आवास में चला गया। उसने स्कंदक से पूछा–

१. लोक सांत है या अनन्त ?

२. जीव सांत है या अनन्त ?

३. मोक्ष सांत है या अनन्त ?

४. मुक्त-आत्मा सांत है या अनन्त ?

५. किस मरण से मरता हुआ जीव जन्म-मरण की परम्परा को बढ़ाता है या घटाता है?

स्कंदक का मन सन्देह से आलोड़ित हो उठा। वह इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सका। पिंगल ने इन प्रश्नों को फिर दोहराया। स्कंदक फिर मौन रहा। पिंगल उससे समाधान लिये बिना लौट आया।

परिव्राजक– आवास में मुक्त गमन और मुक्त आगमन और मुक्त प्रश्न हृदय ही मुक्तता से ही सम्भव था।

स्कंदक ने सुना, भगवान महावीर कृतिगला से विहार कर श्रावस्ती आ गए हैं। उसने सोचा- मैं भगवान महावीर के पास जाऊं और इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करूं। उसे भगवान महावीर के पास जाने और प्रश्नों का उत्तर पाने में कोई संकोच नहीं था। वह मुक्तभाव से भगवान महावीर के पास गया। भगवान ने मुक्तभाव से स्कंदक को उन प्रश्नों के उत्तर दिए। भगवान ने कहा- 'स्कंदक ! द्रव्य और क्षेत्र की दृष्टि से लोक सांत है, काल और पर्याय की दृष्टि से लोक अनन्त है। इसी प्रकार जीव, मोक्ष और मुक्त-आत्मा भी द्रव्य और क्षेत्र की दृष्टि से सांत है, काल और पर्याय की दृष्टि से अनन्त है। मरण दो प्रकार का होता है-बाल मरण और पंडित मरण। बाल मरण से मरने वाला जीव जन्म-मरण की परम्परा को बढ़ाता है और पंडित मरण से मरने वाला उसे घटाता है।'

भगवान के उत्तर सुन स्कंदक परिव्राजक का मानस-चक्षु खुल गया। उसके मुक्त मानस ने स्वीकृति दी और वह महावीर के पास दीक्षित हो गया।

४. भगवान महावीर राजगृह के गुणशीलक चैत्य में विहार कर रहे थे। उस चैत्य के आसपास अनेक अन्यतीर्थिक परिव्राजक रहते थे। एक दिन कालोदायी, शैलोदायी आदि कुछ परिव्राजक परस्पर बातचीत करने लगे। उनके वार्तालाप का विषय था भगवान महावीर के पंचास्तिकाय का निरूपण। वे बोले- 'श्रमण महावीर पांच अस्तिकायों का निरूपण करते हैं- धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय । इनमें पहले चार अस्तिकायों को वे अजीव बतलाते हैं और पांचवें अस्तिकाय को जीव । चार अस्तिकायों को वे अमूर्त बतलाते हैं और पुद्गलास्तिकाय को मूर्त। यह अस्तिकाय का सिद्धान्त कैसे माना जा सकता है?

परिव्राजकों का वार्तलाप चल रहा था। उस समय उन्होंने श्रमणोपासक मदुक को गुणशीलक चैत्य की ओर जाते हुए देखा। एक परिव्राजक ने प्रस्ताव किया- 'श्रमण महावीर पंचास्तिकाय का प्रतिपादन करते हैं, यह हमें भली-भांति ज्ञात है। फिर भी अच्छा है कि मदुक से इस विषय में और जानकारी प्राप्त कर लें। 'इस प्रस्ताव पर सब सहमत होकर वे मदुक के पास गए। उन्होंने कहा- 'मदुक ! तुम्हारे धर्माचार्य श्रमण महावीर पंचास्तिकाय का प्रतिपादन करते हैं। उनमें चार अजीव हैं और एक जीव। चार अमूर्त हैं और एक मूर्त ! मदुक ! अस्तिकाय प्रत्यक्ष नहीं है, अतः उन्हें कैसे माना जा सकता है?' मद्दक ने उन परिव्राजकों से कहा- 'जो क्रिया करता है, उसे हम जानते-देखते हैं और जो क्रिया नहीं करता, उसे हम नहीं जानते-देखते।' **(क्रमशः)**

3 बातें ज्ञान की

— आचार्यश्री महाश्रमण

तीन कारण अल्प आयुष्य के

कुछ बच्चे कबूतर को उड़ाते हैं। कबूतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बैठ जाता है। फिर वहां से भी उसे उड़ाया जाता है। इस प्रकार बच्चे बार-बार कबूतर को उड़ाते हैं और एक खेल-सा खेलते हैं। बच्चों के लिए तो वह मनोविनोद हो गया, किन्तु कबूतर को कितनी तकलीफ होती होगी।

इसी प्रकार कुछ पक्षी बैठे हैं, चुगा खा रहे हैं। उनके बीच में अचानक कोई व्यक्ति जाकर खड़ा हो जाता है तो पक्षी उड़ जाते हैं, उन्हें तकलीफ हो सकती है। वायुकाय की हिंसा भी हो सकती है। पक्षियों के मन में भय पैदा हो सकता है। वे भयभीत होकर उड़ते हैं। इस तरह अनेक प्रकार से प्राणी को कष्ट देना जीव-हिंसा का काम हो जाता है।

प्राचीनकाल में एक युवक बाहर पढ़कर आया था। मां ने कहा-बेटा! पहले स्नान कर लो। बाद में भोजन कर लेना। वह स्नान करने के लिए जिस स्थान पर गया, वहां चींटियां बहुत थीं। माँ ने दूसरे स्थान की ओर संकेत करते हुए कहा-बेटा! तुम उधर नहा लो, वहां चींटियां नहीं हैं। बेटे ने कहा-मैं तो यहीं स्नान करूंगा। उसने वहीं स्नान किया। बेचारी कितनी चींटियां पानी में डूबकर मर गई होंगी। यदि वह और कहीं स्नान कर लेता तो चींटियां नहीं मरतीं। मगर उसने चींटियों की परवाह नहीं की। क्योंकि उसके मन में प्राणियों के प्रति निरनुकम्पा का भाव था। इस प्रकार जो आदमी छोटी-छोटी बातों में अनावश्यक प्राणियों की हिंसा करता है, वह अल्प आयुष्य के बंधन का एक रास्ता तैयार कर लेता है।

अल्प आयुष्य के बंधन का दूसरा कारण है-झूठ बोलना। किसी आदमी को तो कारणवश, परिस्थितिवश झूठ बोलना पड़ता है और कोई व्यक्ति यूं ही बात-बात में, हंसी-मजाक में झूठ बोल देता है। कोई लोभ के कारण, कोई गुस्से में आकर, कोई भय के कारण भी झूठ बोल देता है। वह झूठ बोलकर अल्प आयुष्य का बंधन कर सकता है। इसलिए जितना संभव हो सके उतना झूठ से बचने का प्रयास करना चाहिए। झूठ बोलने से आत्मा मलिन होती है। जिसको ज्यादा झूठ-कपट करने की आदत होती है, वह तिर्यंच गति का आयुष्य भी बांध सकता है।

अल्प आयुष्य के बंधन का तीसरा कारण है-गृहस्थ के द्वारा साधु को अकल्पनीय आहार आदि देना। कोई व्यक्ति साधु को जानबूझकर छल-कपट से सचित्त वस्तु बहरा दे तो उससे भी अल्प आयुष्य का बंधन होता है। जैसे, कोई संत अपने संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के घर गोचरी के लिए जाता है और उन ज्ञातिजनों को भी यह ज्ञात होता है कि आज हमारे घर नातीले संत गोचरी आने वाले हैं तो वे कोई विशेष चीज बाजार से खरीदकर ले आते हैं, मिठाई आदि बना लेते हैं या उनको जो चीज पसंद है वह चीज बना लेते हैं। संत आकर पूछते हैं-यह किसके लिए बनाया है? तब वे झूठ बोल देते हैं कि हमारे लिए ही बनाया है। इस प्रकार छल-कपट के साथ अशुद्ध आहार बहराना, अकल्पनीय आहार बहराना अल्प आयुष्य का निमित्त बन जाता है, कारण बन जाता है। इसलिए साधु को छल-कपटपूर्वक, जानबूझकर उनके लिए बनाकर, मंगवाकर, खरीदकर आहार नहीं बहराना चाहिए। यदि कभी किसी कारणवश ऐसा हो भी जाए तो कम से कम झूठ तो नहीं बोलना चाहिए। जो बात है वह साफ-साफ बता देनी चाहिए कि महाराज ! हमने बनाया या मंगवाया तो आपके लिए ही है। ऐसा स्पष्ट कहकर पाप से बचने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रकार ने अल्प आयुष्य बंधन के तीन कारण बताए हैं।

तीन उपकारी पुरुष

ठाणं में बताया गया है– **तओ रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा-पत्तोवगे, पुप्फोवगे, फलोवगे। एवामेव तओ पुरिसजाता पण्णत्ता, तं जहा-पत्तोवारुक्खसमाणे, पुप्फोवारुक्खसमाणे, फलोवारुक्खसमाणे। 3/28**

वृक्ष तीन प्रकार के होते हैं-

1. पत्रों वाले,
2. पुष्पों वाले,
3. फलों वाले।

इसी प्रकार पुरुष भी तीन प्रकार के होते हैं-

1. कुछ पुरुष पत्रों वाले वृक्षों के समान होते हैं-अल्प उपकारी,
2. कुछ पुरुष पुष्पों वाले वृक्षों के समान होते हैं-विशिष्ट उपकारी,
3. कुछ पुरुष फलों वाले वृक्षों के समान होते हैं-विशिष्टतर उपकारी।

(क्रमशः)

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद उत्तर।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेयुप उत्तर अहमदाबाद के तत्वावधान में तेरापंथ भवन-मोटेरा के रमणीय हॉल में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'उड़ान-शिखर की ओर' का भव्य व गरिमामय कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में सीपीएस-जोनल ट्रेनर आकाश शाह मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में उपस्थित हुए। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा - इस दुनिया में बहुत से ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो शिखर पर पहुंचने का चिंतन ही नहीं करते। ऐसा व्यक्ति भीड़ में ही पैदा होते हैं, भीड़ में ही रहते हैं एवं भीड़ में ही ज़िन्दगी पूरी कर देते हैं। कुछ व्यक्तियों का स्वभाव कौवे की तरह होता है। कौवा दूसरों की थाली की तरफ ही देखता है एवं भीड़ में ही रहता है। ऐसे व्यक्ति अपनी औकात पहचान ही नहीं पाते। विरले व्यक्ति ही होते हैं, जिनके मानस में उड़ान भरने की भावना जागृत होती है। उड़ान वही भर सकता है, जिसका व्यक्तित्व व्योमस्पर्शी होता है। व्यक्तित्व को सजाने-संवारने में अनेक बिन्दु काम करते हैं। उनमें महत्त्वपूर्ण है - आत्मविश्वास। जिस व्यक्ति का आत्मविश्वास प्रबल होता है, वो शिखर का स्पर्श कर सकता है। जिस व्यक्ति का धैर्य सहचर होता है, वो शिखर की ओर उड़ान भरता है। उड़ान भरना अच्छी बात है किन्तु व्यक्ति संस्कारों व संस्कृति का बेल्ट बांधकर ही उड़ान भरे। संस्कारों के साथ जो व्यक्ति उड़ान भरता है, आगे रहता है, वह व्यक्ति हर स्थान पर मान-सम्मान प्राप्त करता है। अपने व्यक्तित्व को संवारें एवं शिखर की ओर प्रस्थान करें। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा - व्यक्तित्व निर्माण के घटक तत्त्व हैं - खुद को जानें। अपनी योग्यता व क्षमता को पहचाने बिना कोई भी शिखर तक नहीं पहुंच सकता। जिसकी सोच बड़ी व सकारात्मक है, वही व्यक्तित्व को संवार सकता है। पुरुषार्थ व समय प्रबंधन करने वाले व्यक्ति को शिखर तक पहुंचने में कोई रोक नहीं सकता। साध्वी मैत्री प्रभाजी ने मंच का कुशल व प्रभावी संचालन किया। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने मंगल संगान व साध्वी सम्यक्त्वयशाजी ने विचार रखे। मुख्य वक्ता आकाश शाह ने 5 D की चर्चा करते हुए कहा- ड्रीम (सपने) शिखर तक पहुंचने के लिए डायरेक्शन (दिशा) सही हो। डिसीप्लीन व डेडीकेशन तथा डिटरमिनेशन इन फाइव डी (5 D) का उपयोग करने वाला लक्ष्य तक पहुंच सकता है, उड़ान शिखर की ओर भर सकता है। तेयुप उपाध्यक्ष कुलदीप नोलखा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। प्रवीण संकलेचा ने मुख्य वक्ता का परिचय दिया। गायक अरहंत बाफना के साथ तेयुप साथियों ने साध्वी श्रीजी द्वारा रचित 'उड़ान' गीत की सुमधुर प्रस्तुति दी।

जुलाई 2026 सप्ताह के विशेष दिन

03 जुलाई
आचार्यश्री तुलसी का 30वां महाप्रयाण दिवस

04 जुलाई
भगवान ऋषभ च्यवन कल्याणक

07 जुलाई
भगवान विमलनाथ निर्वाण कल्याणक

09 जुलाई
भगवान नमिनाथ दीक्षा कल्याणक

12 जुलाई
आचार्यश्री महाप्रज्ञ का 107वां जन्म दिवस

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 जून - 05 जुलाई 2026

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद के समाचार

पर्वत पाटीया

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा व तेरापंथ युवक परिषद् का शपथग्रहण समारोह युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या शासन श्री साध्वी मधुबाला जी आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन सिटीलाइट में आयोजित हुआ । श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कमलपुगलिया ने किया ।तेरापंथ सभा पर्वत पाटीया के अध्यक्ष संजय बोहरा व तेयुप अध्यक्ष अशोक कोचर ने अपनी टीम की घोषणा की । संस्था शिरोमणि श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के मुख्य न्यासी संजय सुराणा ने श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा पर्वत पाटीया की शपथ दिलाई व शुभकामनाएं मंगलकामनाएं प्रेषित की।साध्वी श्री मंजुलयशा जी ने आध्यात्मिक कार्य करके समाज को कैसे आगे बढ़ायें और सभी के प्रति मंगलकामनाएं प्रेषित की। संस्था शिरोमणि श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के गुजरात राज्य के आंचलिक प्रभारी अनिल जी चंडालिया, उपाध्यक्ष फूलचंद छत्रावत व अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के महामंत्री सौरभ पटावरी,सिटीलाइट तेरापंथ भवन के मैनेजिंग ट्रस्टी अनिल बोथरा ने अपने विचार रखे और सभी को शुभकामनाएं मंगलकामनाएं प्रेषित की।

बालोतरा

तेरापंथ भवन अमृत सभागार में शासनश्री साध्वी सत्य प्रभाजी एवं साध्वी कुंदन प्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। साध्वी सत्य प्रभाजी ने कहा आज तेरापंथ सभा का शपथ ग्रहण कार्यक्रम हुआ। तेरापंथ सभा स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण संस्था हे। जिसमें किसी व्यक्ति को महत्वपूर्ण पद संभालने से पहले पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई जाती है। तेरापंथ सभा के ऊपर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा है जिसको गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी ने संस्था शिरोमणि से अलंकृत किया हे उसके निर्देशानुसार हर आध्यात्मिक सामाजिक कार्य को समर्पण समन्वय के साथ करने का लक्ष्य रखना चाहिए। निवर्तमान अध्यक्ष महेन्द्र ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष राणमल फोलामेहता को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।तत्पश्चात वर्तमान अध्यक्ष राणमल फोलामेहता ने अपने पदाधिकारी एवं कार्य समिति के नामों की घोषणा करते हुए उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के कार्यकारणी सदस्य एवं बालोतरा सभा के प्रभारी गौतम सालेचा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। निवर्तमान अध्यक्ष महेन्द्र ने सभा के डॉक्यूमेंट किट वर्तमान अध्यक्ष राणमल फोलामेहता को हस्तांतरण कर सुपर्द किये। कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य अतिथियों एवं श्रावक समाज का आभार सभा सहमंत्री राजेश बाफना ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा मंत्री मोहन बाफना ने किया।

अररिया कोर्ट

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांत कुमारजी मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद अररिया कोर्ट का शपथग्रहण आयोजित हुआ। सभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा - सभी को अपने आप में गौरव की अनुभूति होनी चाहिए कि मैं तेरापंथ धर्मसंघ का सदस्य, तेरापंथ युवक परिषद का सदस्य हूं। मुझे विकास करने का अच्छा अवसर मिला है। सामाजिक, व्यक्तित्व, एवं आध्यात्मिक विकास करना है। तेरापंथ युवक परिषद के साथ जुड़ने से व्यक्तित्व का विकास होता है।आप सामाजिक विकास में भी भूमिका निभा सकते है। स्वयं के लिए, परिवार के लिए विकास तभी वरदान बनता है जब आध्यात्मिक विकास हो। गुरु के मार्गदर्शन से तेरापंथ युवक परिषद के कार्य चलते है। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा सामाजिक एवं आध्यात्मिक दोनों कार्य होते है। हमें गुरु के मार्गदर्शन में चलना है। संस्था के कार्य में सहभागी बनना है। जिम्मेदार एवं भरोसे लायक श्रावक कार्यकर्ता बनना है। संस्था के कार्य में अपनी भूमिका के द्वारा योगदान देना चाहिए। संघ विकास में स्वयं का विकास समझे।सभी अपने अपने कर्तव्य का पालन करें। धर्मसंघ एवं संस्था के प्रति समर्पित रहें। तेयुप सदस्यों के विजय गीत के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप पूर्व महामंत्री अमित नाहटा ने करवाया। निवर्तमान अध्यक्ष अंकित मालू ने नव मनोनीत अध्यक्ष अंकित बेगवाणी को शपथ दिलाई। अध्यक्ष अंकित बेगवाणी ने अपनी टीम को शपथ दिलाई। अध्यक्षीय उद्बोधन में अंकित बेगवाणी ने दायित्व को जागरुकता ने निभाने एवं सबको मिलकर कार्य करने की बात कही।मंच संचालन तेरापंथ युवक परिषद मंत्री प्रदीप चिंडालिया ने किया।

अहमदाबाद पूर्व

तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद पूर्व का शपथ ग्रहण समारोह शासन श्री साध्वी राम कुमारी जी आदि ठाणा-4 के सानिध्य में तेरापंथ भवन कांकरिया मणिनगर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत साध्वी श्री जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई । तेयूप सदस्यों द्वारा विजय जीत का सगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथी सभा अहमदाबाद के अध्यक्ष राकेश सिपानी ने किया। चुनाव अधिकारी वीरेंद्र मणोत एवं सह चुनाव अधिकारी मनोज सिंघी ने नवनियुक्त अध्यक्ष नलिन दूगड़ को नियुक्ति पत्र भेंट किया साथ में सभी संस्थाओं के पदाधिकारी भी जुड़े नव नियुक्त अध्यक्ष नलिन दूगड़ को तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म के ट्रस्टी रायचंद लुनिया ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवनियुक्त अध्यक्ष ने अपने पदाधिकारी की एवं कार्य समिति सदस्यों की घोषणा की। अध्यक्षः नलीन दुगड़, उपाध्यक्ष प्रथम : दीपक बोथरा, उपाध्यक्ष द्वितीयः प्रशांत नाहटा, मंत्री : शीतल डोसी , सह मंत्री प्रथम : संदीप बरडिया, सह मंत्री द्वितीयः हर्ष सिंघी, कोषाध्यक्ष : हितेश लुनिया , संगठन मंत्री : गौरव भंसाली। इन सभी को शपथ अभातेयूप के प्रबुद्ध विचारक अशोक लुनिया एवं अहमदाबाद सभा के मंत्री नरेंद्र जी माण्डोतर ने दिलाई। साध्वी सुविधि प्रभा जी ने अपने संबोधन में युवकों को प्रेरणा देते हुए कहा कि युवक तेरापंथ भवन में उपस्थित होकर शनिवार की सामयिक का लक्ष्य, उपवास का लक्ष्य रखें अपना स्वयं का आध्यात्मिक विकास करें।

विश्व पर्यावरण दिवस जागरुकता अभियान पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

दिल्ली

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा निर्देशित एवं अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस जागरुकता अभियान आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय छतरपुर, महरौली में आयोजित हुआ जिसमें अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा गत वर्ष लगाए गए 101 पेड़ों की जांच एवं साफ-सफाई की गई, तथा नए पौधों का पौधा रोपण भी किया गया। आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मनदीप कुमार प्रिंसिपल आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, विशिष्ट अतिथि डॉ. आलोक कुमार मिश्रा, संयुक्त सचिव भारतीय विश्वविद्यालय संघ एवं राकेश कुमार यादव, उपनिदेशक नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत थे। इस अवसर पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन किया। उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस पर अपने विचार रखें एवं अणुव्रत आचार संहिता पर विशेष जानकारी दी।

चेन्नई

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति, चेन्नई द्वारा आचार्य महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि पुलकितकुमारजी एवं मुनि आदित्यकुमारजी के सान्निध्य में एचएफसीएल कम्पनी में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। देश भर में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में संचालित पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायी पहल 'एक संकल्प - एक दिन - एक साथ' के मूल मंत्र के साथ आयोजित इस अभियान के तहत दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक ए सी बंद रखने का अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत द्वारा आह्वान किया गया, उन्होंने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा सरकार की जिम्मेदारी के साथ हम सब की भी सामुहिक जिम्मेदारी है। मुनि पुलकितकुमारजी ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा करना हर नागरिक का दायित्व है।

मुंबई

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में, अणुव्रत समिति मुंबई के निर्देशन में, क्षेत्रिय अणुव्रत समिति गोरेगांव के संयोजक शांतिलाल बाफना के संयोंजकीय में,पगरव सोसायटी के प्रांगण में वृक्षारोपण का सुंदर आयोजन किया, जिससे स्थानीय सोसायटी के रहवासियो नें बहुत ही प्रशंसा की, एवं कहाँ की पेड़ पर्यावरण का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। धरती पर पेड़ों और पौधों के अस्तित्व के बिना मनुष्य और जानवरों की अन्य प्रजातियों का अस्तित्व संभव नहीं है। वृक्षारोपण के बुनियादी लाभों में से एक यह है कि यह हमें ऑक्सीजन देती हैं। ये कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण को शुद्ध और स्वच्छ बनाने का कार्य करती हैं। रबर इसके अलावा फल, लकड़ी, आदि और भी बहुत कुछ प्रदान करते हैं। लोगों को अपने लाभों को बल देते हुए अधिक पेड़ों के रोपण के महत्व के बारे में संवेदनशील होना चाहिए। इसका प्रसार रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, सोशल मीडिया, होर्डिंग और पत्रक के माध्यम से किया जा सकता है।

घाटकोपर

अणुव्रत समिति (घाटकोपर क्षेत्र) के तत्त्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्रीजी ने इस अवसर पर कहा - जैन तीर्थंकरों एवं आचार्यों ने मानव जाति को पर्यावरण को संरक्षित करने की प्रेरणा दी। इसके लिए उन्होंने संगम का शंखनाद किया। मानव का अस्तित्व प्रकृति के अस्तित्व के साथ जुड़ा हुआ है। यदि मनुष्य प्रकृति का अंधाधुंध दोहन करता है तो वह अपनी भावी पीढ़ी के साथ न्याय नहीं करता है। इस अवसर पर प्रबुद्ध साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने कहा- भगवान महावीर ने ढाई हजार वर्ष पहले पृथ्वी, पानी आदि तत्वों के सजीव होने की उद्घोषणा की। उन्होंने कहा कि जो इन सबके अस्तित्व का निषेध करता है वह अपने स्वयं के अस्तित्व का निषेध करता है।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पृथ्वी पानी, वनस्पति आदि सुरक्षा जरूरी है। कार्यक्रम के प्रारंभ में अणुव्रत समिति के श्रवण चौरडिया ने प्रासंगिक अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम की समायोजना में मुंबई अणुवत समिति के सहमंत्री राकेश बडाला, राजेश कुमट आदि की सक्रिय सहभागिता रही। मुंबई सभा से सुरेश राठौड ने शुभकामनाएं दी।

श्रद्धा एवं भावनाओं के मध्य मंगल भावना समारोह आयोजित

फरीदाबाद।

तेरापंथ भवन, फरीदाबाद में मुनि विमल कुमार जी ठाणा-4 के प्रवचन के उपरांत मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरेंद्र घोषल, तेरापंथ महिला मंडल की उपाध्यक्षा चंदा भंसाली, टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय नाहटा, तेरापंथ युवक परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष भरत बेगवानी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेश जैन, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजू लूनिया सहित अन्य श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी मंगल भावनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर मुनि धन्य कुमार जी, मुनि अक्षय कुमार जी एवं मुनि श्री मधुर कुमार जी ने भी अपने प्रेरक विचार व्यक्त किए। अंत में शासन श्री मुनि विमल कुमार जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा, ₹जो समय का लाभ उठाते हैं, वे मोती प्राप्त करते हैं और जो समय का लाभ नहीं उठा पाते, वे बाद में केवल पछताते हैं।₹ उन्होंने आगे प्रेरणा देते हुए कहा कि समाज को सुई और धागे की तरह जोड़कर रखें, परस्पर जुड़े रहें और हृदय में सदैव कोमलता बनाए रखें। एकजुटता ही समाज की सबसे बड़ी शक्ति है। जो लोग समाज से दूर हो गए हैं या नियमित रूप से नहीं आ पा रहे हैं, उनकी सार-संभाल करते हुए उन्हें प्रेमपूर्वक पुनः समाज से जोड़ने का प्रयास करें। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन सभा के सह मंत्री चैनरूप तातेड़ ने किया।

बुद्धि और संस्कार का समन्वय है अध्यात्म

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ धर्मसंघ के बुद्धिजीवियों और पेशेवरों के संगठन 'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम' (टीपीएफ) का स्थापना दिवस समारोह रोहिणी स्थित तेरापंथ भवन में गरिमापूर्ण तरीके से आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपने पावन सान्निध्य और प्रेरक उद्बोधन से उपस्थित सदस्यों का मार्गदर्शन किया। सभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा-₹टीपीएफ धर्मसंघ के प्रबुद्ध जनों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संगठन है और समाज में बुद्धिजीवी वर्ग नेत्रों के समान होता है, जो सबको सही दिशा दिखाता है।

आप सभी अपने-अपने क्षेत्रों में सफल हैं, लेकिन जब बुद्धि के साथ संस्कार और अध्यात्म का समन्वय होता है, तभी वह प्रज्ञा बनती है। आप अपनी शिक्षा और व्यावसायिक कौशल का उपयोग केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित न रखें, बल्कि इसे धर्मसंघ की प्रभावना, नैतिक मूल्यों की स्थापना और समाज की सेवा का माध्यम बनाएं।

इस अवसर पर टीपीएफ दिल्ली की अध्यक्ष कविता बरडिया ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का संचालन गौतम डूंगरवाल ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

युवाचार्य के प्रति हो...

२.वंदन का नियम: बड़ों को चौबीस घंटे में एक बार वंदना करना व्यवहार-प्रशिक्षण का भाग है, किंतु यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए कि युवाचार्य स्वयं प्रत्येक संत के पास जाकर वंदना करें।

३. सामूहिक वंदन की छूट : संतों की अधिक संख्या होने पर युवाचार्य एक स्थान पर बैठकर भी बड़ों का नाम लेकर वंदन कर सकते हैं।

४. मार्ग की मर्यादा : यदि मार्ग में अथवा किसी गली में युवाचार्य सामने से आते हुए दिखाई दें, तो छोटे संतों को नीचे बैठकर वंदना करनी चाहिए।

५. मंत्रणा की गोपनीयता: आचार्य और युवाचार्य के मध्य होने वाली मंत्रणाओं को पूर्णतः गोपनीय रखना चाहिए तथा किसी भी निर्णय को सार्वजनिक घोषणा से पूर्व प्रसारित नहीं करना चाहिए।

६. कागजातों की मर्यादा : युवाचार्य की डायरी अथवा अन्य निजी कागजात को उनकी अनुपस्थिति में देखना गंभीर प्रमाद है, इससे हर हाल में बचना चाहिए।

७. विहार का औचित्य : युवाचार्य प्रत्येक संत को विहार के समय पहुँचाने जाएँ, यह आवश्यक नहीं है। इस विषय में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार औचित्य का विचार किया जाना चाहिए।

८. अविचलित मन : गुरु अथवा युवाचार्य द्वारा अनुशासित किए जाने पर मन को विचलित नहीं करना चाहिए तथा शासन में दृढ़ता बनाए रखनी चाहिए।

९. विनय का भाव : अपने से बड़ों के प्रति विनय का भाव हमेशा बना रहे, इसी के अनुरूप वंदना-व्यवहार रखना चाहिए।

कोहिनूर से भी कीमती...

२. मेरु पर्वत का भार : कहा गया है कि पांच महाव्रतों को स्वीकार करना मानों मेरु पर्वत को अपने हाथ में ले लेना है। इस भार को वहन करने वाले साधु व चरित्रात्मा दुनिया के लिए वंदनीय बन जाते है।

महाव्रतों का सूक्ष्म विश्लेषण : सत्य और ब्रह्मचर्य में कोई अपवाद नहीं- पूज्य प्रवर ने साधु जीवन की मर्यादा और गृहस्थों के लिए अणुव्रत का मार्ग स्पष्ट किया।

१. मर्यादा और अपवाद : पांच महाव्रतों में अहिंसा व अपरिग्रह महाव्रत अलग कोटि के और शेष तीन महाव्रत अलग रूप के होते हैं। कई व्यावहारिक परिस्थितियों में साधु से द्रव्य हिंसा हो सकती है; जैसे विहार के समय बरसात आने पर अप्काय के जीवों की हिंसा संभव है, यद्यपि यह भाव हिंसा नहीं है। इसी प्रकार अपरिग्रह महाव्रत में भी धर्मोपकरण की कुछ वस्तुएं मान्य हैं, परन्तु सत्य, अचौर्य और ब्रह्मचर्य महाव्रतों में कोई भी अपवाद मान्य नहीं है।

२. अनावश्यक संग्रह से बचें : साधना को निर्मल बनाने के लिए साधु-साध्वियों को अनावश्यक संग्रह से बचकर अल्पोपधि होने का प्रयास करना चाहिए।

३. गृहस्थों को अणुव्रत : अहिंसा, संयम व तप ही साधु की वास्तविक संपत्ति और सबसे बड़ा धन है। गृहस्थों से यदि इन महाव्रतों का पालन न हो सके, तो उन्हें पांच अणुव्रतों का पालन कर छोटे व्रतों को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

बोलती किताब

प्रेक्षा-ध्यान : अनुप्रेक्षा

आत्मरूपांतरण और अंतर्मन की जागृति का आध्यात्मिक विज्ञान

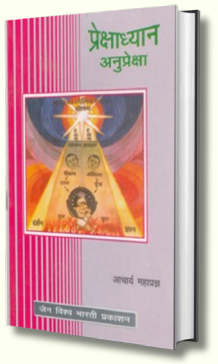

पूज्य आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के मार्गदर्शन में विकसित प्रेक्षा-ध्यान परंपरा पर आधारित पुस्तक "प्रेक्षा-ध्यान : अनुप्रेक्षा" आध्यात्मिक साधना को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि के साथ प्रस्तुत करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें ध्यान को केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मनुष्य के आंतरिक रूपांतरण की प्रभावी प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है। यह पद्धति प्राचीन दार्शनिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक चिंतन के समन्वय से विकसित हुई है, जिसका उद्देश्य मनुष्य के भीतर छिपे आवेश, भय और हिंसात्मक प्रवृत्तियों को शांत कर अहिंसा, शांति और आनंद की स्थापना करना है।

प्रेक्षा-ध्यान की विभिन्न प्रक्रियाएँ—जैसे श्वास-प्रेक्षा, चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा, लेश्या-ध्यान, अनुप्रेक्षा और कायोत्सर्ग—मनुष्य के व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन लाने की साधनाएँ हैं। इन अभ्यासों के माध्यम से व्यक्ति स्वयं अनुभव करने लगता है कि उसके भीतर क्रोध, भय, ईर्ष्या और लोभ जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ धीरे-धीरे क्षीण हो रही हैं। यहाँ केवल उपदेश नहीं, बल्कि प्रयोग और अनुभव के माध्यम से आत्मविकास का मार्ग प्रस्तुत किया गया है।

इस कृति में अनुप्रेक्षा की विशेष चर्चा की गई है, जिसे विचार का ध्यान कहा जा सकता है। इसमें बताया गया है कि ध्यान केवल निर्विचार अवस्था ही नहीं, बल्कि सत्य और यथार्थ पर केंद्रित विचार भी ध्यान का एक महत्त्वपूर्ण रूप है। जब मनुष्य अपने विचारों को राग-द्वेष, अहंकार और पक्षपात से मुक्त कर सत्य की खोज में लगाता है, तब उसकी देखने और जानने की क्षमता अधिक गहरी और व्यापक हो जाती है। यही विचय-ध्यान व्यक्ति को जीवन के सत्य का अनुभव कराने की दिशा में अग्रसर करता है।

यह पुस्तक बताती है कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के स्वभाव का रूपांतरण है। केवल बाहरी आचरण या नियमों से परिवर्तन संभव नहीं होता, बल्कि उसके लिए भीतर की चेतना को जागृत करना आवश्यक है। अनुप्रेक्षा के प्रयोगों के माध्यम से व्यक्ति अपने भावों का परिवर्तन कर सकता है और अपने व्यक्तित्व को अधिक शांत, संतुलित और जागरूक बना सकता है। इस प्रकार "प्रेक्षा-ध्यान : अनुप्रेक्षा" आधुनिक युग के लिए एक ऐसी साधना-पद्धति प्रस्तुत करती है, जो आत्मविकास के साथ-साथ मानव समाज को भी अधिक नैतिक, शांत और समरस बनाने की प्रेरणा देती है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

रक्तदान शिविर का आयोजन

बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में संचालित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत एम्बैसी गोल्फ लिंक्स सॉफ्टवेयर पार्क परिसर में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। यह शिविर तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर एवं गोल्फ लिंक्स सॉफ्टवेयर पार्क प्राइवेट लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। शिविर के दौरान तेयुप विजयनगर के मंत्री कमलेश दक ने उपस्थित कर्मचारियों एवं युवाओं को रक्तदान के महत्व से अवगत कराते हुए इसे मानव सेवा का श्रेष्ठ माध्यम बताया। उन्होंने अभातेयुप द्वारा वैश्विक स्तर पर संचालित रक्तदान अभियानों एवं उनके सकारात्मक प्रभावों की भी जानकारी दी।

इस अवसर पर तेयुप विजयनगर की टीम द्वारा ईजीएल के विनय, विद्या तथा रक्तदान शिविर में सहयोग प्रदान करने वाली ब्लड बैंक की चिकित्सा टीम का सम्मान किया गया। लायंस ब्लड बैंक एवं बीएमएसटी ब्लड बैंक की विशेषज्ञ चिकित्सा टीमों द्वारा रक्तदाताओं की आवश्यक स्वास्थ्य जांच के उपरांत कुल 49 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
29 जून - 05 जुलाई 2026

दिमाग की ओवरथिंकिंग और स्ट्रेस को डिलीट करना ही असली ध्यान है : आचार्यश्री महाश्रमण

'अध्यात्म - ध्यान योग' पर युगप्रधान की देशना;—खुद को अंदर से कूल रखना ही सबसे बड़ा अचीवमेंट है

लाडनूं।
18 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा परिसर में चतुर्विध धर्मसंघ को "अध्यात्म - ध्यान योग" विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने चंचल मन को वश में करने और आधुनिक दौर में कषायों के नियंत्रण का सबसे व्यावहारिक वैज्ञानिक मार्ग समझाया।

शुभ योग की महिमाः एक साथ शुरू होते हैं पुण्य और निर्जरा– आचार्य प्रवर ने कर्मों के आगमन (आश्रव) और आत्मा की शुद्धि के अंतर्संबंधों को बेहद सूक्ष्म रूप से स्पष्ट किया।

१. अशुभ द्वारों पर लगाएं ताला : मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद और कषाय—ये साढ़े चार आश्रव पूरी तरह अप्रशस्त यानी अशुभ द्वार हैं, जिन्हें साधक को हमेशा रोकना चाहिए।

२. शुभ योग की दो शाखाएं : शुभ कर्मों का आना शुभ योग है। जब जीवन में शुभ योग जागता है, तो वहां से दो धाराएं एक साथ निकलती हैं—पहली कर्मों के विलय (निर्जरा) की और दूसरी पुण्य बंध की। पुण्य बंध पहले होता है और निर्जरा बाद में, हालांकि दोनों कार्यों की शुरुआत एक ही समय पर होती है। सिद्धावस्था और चौदहवें गुणस्थान में पहुंचकर आत्मा इस प्रशस्त आश्रव को भी पार कर पूर्णतः अयोग (परम शांत) स्थिति में लीन हो जाती है।

मन की स्थितियां : जबरदस्ती का दमन साधना नहीं – शांतिदूत ने आज के युवाओं और पाठकों को मन की व्यग्रता से उबरने का तीखा सूत्र दिया।

> आहार करते समय और रात को सोने से ठीक पहले भी कर सकते हैं मेडिटेशन
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

१. एकाग्रता ही असली ध्यान : मन जब विभिन्न आलंबनों पर भटकता है, तो वह व्यग्र मन की चंचलता है। साधना के बल पर जब मन को एक ही केंद्र पर टिका दिया जाता है, तो वह एकाग्रता बनती है। आर्त और रौद्र ध्यान अशुभ हैं, जबकि धर्म और शुक्ल ध्यान आत्मा को ऊँचा उठाते हैं।

२. चेतना का निग्रह : खुद को बाहर से जबरदस्ती दबाना या दमन करना सही मार्ग नहीं है। असली साधना वह है जब व्यक्ति अपनी आंतरिक जागृत चेतना से स्वयं पर शासन (प्रशस्त दम) करना सीख जाता है। योग के माध्यम से खुद को संयमित करना बहुत बड़ी उपलब्धि है।

ध्यान के व्यावहारिक प्रयोग : आहार और निद्रा के समय रखें स्थिरता– पूज्य प्रवर ने आम जनता के लिए ध्यान को बेहद सरल और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अनुकूलता को देखकर इंसानों को ध्यान का नियमित अभ्यास करना चाहिए। जहाँ भी अनुकूल स्थान और समय मिले, व्यक्ति को थोड़ी देर स्थिर होकर अंतर्यात्रा करनी चाहिए। यहाँ तक कि रोज़ाना आहार ग्रहण करते समय भी चित्त की स्थिरता का प्रयोग किया जा सकता है और रात को बिस्तर पर सोने जाने से ठीक पहले भी ध्यान का बेहतरीन प्रयोग करके कषायों को उपशांत किया जा सकता है।

दुनिया के झूठे सपोर्ट छोड़ प्रभु को बनाओ अपना परमानेंट नाथ : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में मुख्य मुनि श्री महावीर कुमारजी की संघीय सेवा और श्रुत आराधना को सराहा; दीर्घायु और स्वस्थ शरीर के लिए पूज्य प्रवर ने बख्शा पावन आशीर्वाद

लाडनूं।
19 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर की सुधर्मा सभा में "अनाथ भी बने सनाथ" विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने समाज और युवाओं को 'अकेलेपन' का तात्विक बोध कराते हुए सच्चे आत्मिक सपोर्ट (सनाथता) को खोजने का मार्ग दिखाया।

संसार का सबसे बड़ा कड़वा सच : यहाँ सब अकेले हैं – आचार्य प्रवर ने मानव जीवन की अनाथता और रिश्तों की सीमाओं का कड़ा विश्लेषण किया।

१. कोई दुःख नहीं बांट सकता : आगम के अनुसार, इस संसार में आदमी की सबसे बड़ी अनाथता यह है कि कोई भी दूसरा व्यक्ति उसकी आंतरिक वेदना या मानसिक कष्ट को कम नहीं कर सकता। ज्ञाति जन, मित्र वर्ग, बेटे या भाई—कोई भी दुःख को शेयर नहीं कर सकता; मनुष्य को अकेले ही इसे भुगतना होता है।

२. असंभव है बुढ़ापे और मौत से बचना : दुनिया का कोई भी रिश्ता या पावर इंसान को बुढ़ापे और मृत्यु से बचाने की गारंटी नहीं दे सकता। यहाँ तक कि गंभीर बीमारी की स्थिति में एक स्टेज के बाद बड़े से बड़ा चिकित्सक भी पूरी तरह असहाय हो जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो इस धरा पर हर जीव अकेला और अनाथ है।

दृष्टिकोण हो यथार्थ ग्राहीः प्रभु को बनाएं अपना नाथ– शांतिदूत ने दृष्टिकोण की शुद्धता और प्रभु भक्ति के माध्यम से सनाथ होने का व्यावहारिक सूत्र दिया।

१. चीटिंग की वृत्ति का हो अंत : किसी भी बात को समझने के लिए इंसान का दृष्टिकोण ऋजु (सीधा) और यथार्थ को स्वीकार करने वाला होना चाहिए।

> बीमारी होने पर हॉस्पिटल की हेल्प तो ली जा सकती है, लेकिन लाइफ के एक टर्निंग पॉइंट पर आकर मेडिकल साइंस भी पूरी तरह असहाय हो जाते हैं।

जीवन में किसी को ठगने की वृत्ति बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।

२. साधुत्व से सनाथता : जो जीवन में संयम स्वीकार कर अहिंसा का पालन करता है, वह संसार के जीवों को अभयदान देकर स्वयं 'नाथ' बन जाता है। यदि कोई खुद को अकेला या अनाथ समझता है, तो वह परमात्मा को अपना नाथ बना ले, उसकी अनाथता तुरंत दूर हो जाएगी। इस संदर्भ में पूज्य प्रवर ने एक प्रेरक गीत का संगान भी किया।

श्रुत पंचमी पर मुख्य मुनि श्री महावीर कुमारजी का 38वां जन्मदिवस– सुधर्मा सभा में श्रुत पंचमी का पावन पर्व भी उल्लास के साथ मनाया गया। आचार्य प्रवर ने बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी के 38वें जन्मदिवस के अवसर पर उन्हें विशेष पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने कहा कि मुख्य मुनि अभी तरुणावस्था में हैं। उनकी अच्छी साधना, श्रुत की आराधना और संघीय सेवा निरंतर आगे बढ़ती रहे। उनके उत्तम स्वास्थ्य और सर्वांगीण विकास के लिए मंगलकामना की गई। इस खास मौके पर उपस्थित संत वृंद ने मुख्य मुनि श्री के सम्मान में एक सुंदर बधाई गीत का संगान किया।

> लाइफ में कोई भी पार्टनर आपका स्ट्रेस और कर्मों का दुःख नहीं बांट सकता, इस धरा पर हर इंसान अकेला है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

अतीन्द्रिय ज्ञान

बुद्धि का विकास दुर्लभ है। उससे भी दुर्लभ है प्रतिभा (औत्पतिक ज्ञान अथवा प्रातिभ ज्ञान) का विकास। दुर्लभतम है अतीन्द्रिय ज्ञान की उपलब्धि। आचार्य भिक्षु ने पूर्वजन्म में कोई विलक्षण साधना की थी, इसलिए बचपन से ही उनमें बुद्धि और प्रतिभा का विकास हो गया। प्रतीत होता है, जीवन के अन्तिम समय में उन्हें अतीन्द्रिय ज्ञान उपलब्ध हो गया। सं. 1860 भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी, सिरियारी गांव। दिन का दूसरा प्रहर आधा बीता। आचार्य भिक्षु ध्यान-मुद्रा में स्थित थे। उन्होंने अचानक आंखें खोली और परिषद् के बीच साधुओं को आमंत्रित कर कहा–

1. शहर में त्याग प्रत्याख्यान कराओ।
2. साधु आ रहे हैं, सामने जाओ।
3. साध्वियां आ रही हैं।
4. चौथी बात इतनी धीमे स्वर में कही, जो सुनी नहीं जा सकी।

गुलोजी लुणिया ने कहा– स्वामीजी का मन साधु-साध्वियों में अटका हुआ है। भारमलजी स्वामी ने स्वामीजी से कहा– आप किसी में मन मत रखना।

एक मुहूर्त्त बीता। पाली से अचानक दो संत– मुनि वेणीरामजी तथा मुनि कुशलजी आ गए। उन्होंने वंदना की और आचार्य भिक्षु ने उनके सिर पर हाथ रखा।

दो मुहूर्त्त बीते। खैरवा से तीन साध्वियां– बरलूजी, झूमांजी तथा डाह्याजी आई।

अब सबको लगा– आचार्य भिक्षु ने अतीन्द्रिय ज्ञान-अवधिज्ञान के आधार पर बताया था। मन में जिज्ञासा जागी, पर पूछने का समय बीत गया। रहस्य रहस्य ही रह गया।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

गुरु का महत्त्व

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक व्यक्ति ऐसा होता है जो उसे शिक्षा, संस्कार आदि से सींचन देता है। वह व्यक्ति अंधकार में प्रकाश की भांति होता है, निर्जन वन में भवन की मानिंद होता है। आंखों के लिए अंजन की तरह होता है। जी हां! वे गुरु कहलाते हैं। प्रश्न यह होता है कि गुरु किसे कहते हैं? क्या चेला-चेली होने मात्र से गुरु बन जाते हैं? तो इसका उत्तर है– नहीं!! गुरु शब्द में दो अक्षर होते हैं 'गु' 'रु' दो अक्षर दो विशेषताओं को समेटे हुए हैं–

गु शब्दस्त्वंधकारः स्यात्
रु शब्दस्तन्निरोधकः
अंधकार निरोधत्वाद्-गुरुरित्यभिधीयते।।

अर्थात् जो अंधकार का निरोध करे, वह गुरु। अज्ञान रूपी सघन अंधत्व को, ज्ञान रूपी अंजन श्लाका से जो हमारे चक्षु को खोल देते हैं वह गुरु वंदनीय है, अनुसरणीय है। यदि गुरु न हो तो मार्ग कौन बताए, उस मार्ग पर प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित कौन करे? अतः जीवन में गुरु का होना आवश्यक है। ईश्वर से भी बड़ा दर्जा यदि कोई है तो वह है गुरु का। ईश्वर रूष्ट हो तो गुरु शरण में जा सकते हैं परंतु गुरु यदि रूष्ट हो तो ईश्वर भी त्राण नहीं हो सकते। अतः गुरु हमारे जीवन के लिए, 'इह-पर' भव के लिए कल्याणकारी है।

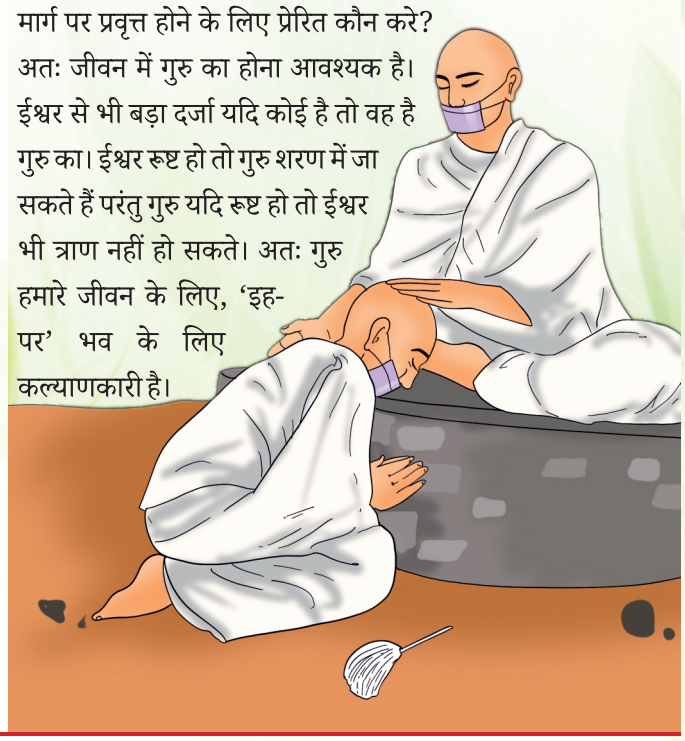

क्या आप जानते हैं?

केवल तैल, जैसे सरसों, बादाम, नारियल का तैल। तैल से कुल्ला करने में विगय नहीं लगती। काजु, बादाम आदि मेवा सामान्य विगय वर्जन में वर्जनीय नहीं है।

साप्ताहिक प्रेरणा

॥ बाजार की मिठाई के त्याग करे ॥

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 जून - 05 जुलाई 2026

पद विसर्जन और वत्सलता के युगपुरुष थे आचार्य तुलसी : आचार्यश्री महाश्रमण

महाप्रयाण दिवस पर लाडनूं में गंगाशहर के 2 हजार श्रद्धालुओं का महासंगम; प्रदर्शनी का हुआ अवलोकन

सुधर्मा सभा में युगप्रधान का पावन संदेश—तन, मन और वचन से किसी को दुःख न देना ही सच्ची दया है

लाडनूं।
23 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने सुधर्मा सभा में 'दयानुकंपी रहें' पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

आचार्य भिक्षु के आलोक में दया की परिभाषाः पापों से रक्षा ही अहिंसा— आचार्य प्रवर ने धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक के सिद्धांतों और आत्मा की शुद्धि को जोड़ते हुए गहरा बोध दिया।

१. संकल्प की भावना : आचार्य श्री भिक्षु ने दया के बारे में बताया कि जीव अपने आयुष्य बल से जी रहा है, उसमें हमारी कोई दया नहीं है। कोई जीवों को मारता है तो वह हिंसा का भागीदार है। किसी जीव को नहीं मारना और ऐसा संकल्प करने की जो भावना है, वह अपने आप में अहिंसा और दया है।

२. पाप आचरण से रक्षा : अपने आप को और दूसरों को पाप आचरणों से बचाना तथा सदुपदेश देकर पाप का परित्याग करा देना भी बहुत बड़ी दया है। आगम के अनुसार साधु में जीवों के प्रति दया का अनुकंपन और स्पंदन होना चाहिए कि कोई जीव मर न जाए।

साधु जीवन की मर्यादा : नवनीत जैसा कोमल हृदय और सहज शांति— शांतिदूत ने संतत्व के वास्तविक स्वरूप और अभयदान की महत्ता को रेखांकित किया।

१. अभयदानी संत : साधु का हृदय नवनीत के समान कोमल होना चाहिए। वह तन, मन और वचन से किसी को दुःख नहीं देता, यही बड़ी दया है। साधु तीन करण और तीन योग से सभी प्रकार की हिंसा का परित्याग करने के कारण सृष्टि के लिए अभयदानी होता है।

> महाव्रत न सधे, तो छोटे-छोटे अणुव्रतों को जीवन में उतारने का प्रयास करें
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

२. सहज समता का भाव : संत वह होता है जो शांत होता है; जिसमें उग्रता है, वहां संतता में कमी है। साधु का मुख प्रसन्नता का घर होता है, वे क्रोधी नहीं होते। उनके चेहरे पर सदैव सहज शांति और सहज समता का भाव झलकता है। सामर्थ्य होने पर भी क्षमा और शांति रखना ही बड़ी बात है।

आचार्य तुलसी का महाप्रयाण दिवसः विसर्जन और अमृत वाणी का स्मरण— पूज्य प्रवर ने नवम अधिशास्ता गुरुदेव तुलसी के ऐतिहासिक अवदानों और उनके बाहरी व आंतरिक व्यक्तित्व का भावपूर्ण स्मरण किया।

१. ऐतिहासिक नेतृत्व : आज आचार्य श्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस है, जिसे २९ वर्ष पूर्ण होने वाले हैं।

वे धर्मसंघ में सबसे छोटी उम्र में युवाचार्य व आचार्य बने, सर्वाधिक समय तक पद पर रहे और एकमात्र ऐसे आचार्य थे जिन्होंने स्वयं अपने पद का विसर्जन कर दिया था। वर्ष 1989 के योगक्षेम वर्ष में युवाचार्य महाप्रज्ञ जी के प्रवचन के बाद आचार्य तुलसी उसका उपसंहार करते थे, जो आज भी अमृत वाणी के पास सुरक्षित है।

२. श्रद्धांजलि और प्रदर्शनी : इस विशेष मौके पर गंगाशहर के बोथरा भवन से तेरापंथ न्यास भवन तक की उनकी अंतिम चर्या को याद किया गया। गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण दिवस के संदर्भ में गंगाशहर से लगभग 2000 श्रद्धालु आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए।

इस दौरान गुरुदेव के जीवन काल पर आधारित एक विशेष प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका आचार्य प्रवर ने गहन अवलोकन किया।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

30वीं पुण्यतिथि पर
शत-शत वंदन

जीवन भर काम करूंगा, गण का भंडार भरूंगा ।
संकल्प अटूट निभाया रे, महाप्राण गुरुदेव ।।

श्रद्धावनत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।